क्रान्तिकारी

For favour of opinion and review.

राजकमल प्रकाशन लिमिटेड

दिल्ली बम्बई नई दिल्ली

मूल्य एक रुपया चार आने

प्रकाशक :
राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड, बम्बई।

मुद्रक :
गोपीनाथ सेठ, नवीन प्रेस, दिल्ली।

दो शब्द

• • •

हमारे देश में सदियों से चली आई पराधीनता को नष्ट करने के जो प्रयत्न हुए उनमें क्रान्तिकारी दल का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैसे तो औरंगज़ेब के राज्यकाल में ही मुग़ल साम्राज्य का पतन होने लगा था। उस समय और उससे पहले होने वाले विद्रोहों को भले ही एक धार्मिक या वर्ग-विशेष की ओर से संगठित विरोध का रूप हम मान लें किन्तु उसमें भी क्रान्ति के बीज मौजूद थे। और आगे चलकर ब्रिटिश-शासन-काल में साम्प्रदायिकता ने अपना रूप बदलकर विद्रोह के नये रूप में प्रवेश किया, वह देश की विद्रोह नीति का राजनीतिक रूप था, जिसने इस देश के सभी लोगों को मिला दिया। १८५७ का विद्रोह राजनीतिक विद्रोह था जिसने काश्मीर से लेकर सुदूर दक्षिण प्रान्त को एक सूत्र में बाँध दिया। १७६५ का सिपाही-विद्रोह, वेल्लोर का विद्रोह, अरब में वहाबी आन्दोलन, वहाबियों का ब्रिटिश विरोध, तीतू मियाँ का आन्दोलन आदि इस बात के प्रमाण हैं कि हमारे आन्दोलन की नींव का मूल देशभक्ति को आधार मानकर चला। केशवचन्द्र, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानन्द, आदि महापुरुषों ने मूल भावनाओं में बौद्धिक तत्वों द्वारा राष्ट्रीयता के जागरण को उद्‌बुद्ध किया। हिन्दू-मुसलमानों के द्वारा संगठित क्रान्ति ने फिर वर्ग-विशेष को अपने में बाँध लिया। परिणामस्वरूप क्रान्ति का आन्दोलन एकांगी हो गया। उसके मूल में जहाँ एक समाज-विशेष ने राष्ट्रीयता के आन्दोलन को

तीव्रता से चलाना अपना ध्येय मान लिया वहाँ देश के दूसरे वर्ग ने ब्रिटिश शासन के द्वारा फैलाए प्रलोभनों से लाभ उठाना भी अपना कर्त्तव्य समझा। अपवाद दोनों ओर थे। फिर भी मूलतः क्रान्तिकारी आन्दोलन बहुत काल तक एक वर्ग-विशेष की ओर से ही होता रहा, जिसमें देश को दैवी शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया। स्वतन्त्रता को गीता के द्वारा समझने का यत्न किया गया। फिर भी अहमदअली सिद्दीकी, अशफाकउल्ला जैसे कुछ व्यक्ति थे जिन्होंने इस आन्दोलन के वास्तविक महत्त्व को समझा और पराधीनता के अभिशाप को सम्पूर्ण देश के लिए स्वीकार किया।

कहना नहीं होगा कि हमारी क्रान्ति का ध्येय एक होते हुए भी उसने कई रूपों, कई आकारों में देश के मानस को झकझोरा है। और निरन्तर प्रवहमान नदी की धारा की तरह क्रान्ति भी कई रूप बदलती रही है।

मेरा 'क्रान्तिकारी' नाटक उसी सामूहिक राष्ट्रीय जागरण की एक झाँकी मात्र है। क्योंकि यह युग स्वयं अपने में कई छोटे-छोटे युगों को समेटे हुए है, मैंने इस नाटक में प्रतीक रूप से वैसी सुगठित झाँकी देने का प्रयत्न किया है। इसमें काल की कुछ सीमाएँ अवश्य हैं किन्तु वे भी नाटक प्रणयन-ग्रन्थियाँ मात्र हैं। कथा-वस्तु को निरन्तर बनाए रखने के लिए वे भाग आवश्यक भी थे। हो सकता है मेरा यह प्रयत्न इतने बड़े काल को कुछ पृष्ठों में बाँधने के समान हो, किन्तु मुझे इससे दुःख नहीं है, सन्तोष है। क्योंकि यह नाटक न तो पूर्ण इतिहास है न कोरी कल्पना, इसीलिए भगतसिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद प्रत्यक्ष रूप से इसमें नहीं आ पाए हैं। और इसीलिए मैंने इस नाटक में ब्रिटिश शासन के वे घृणित परिच्छेद भी नहीं दिये हैं, जिन्होंने अपना पंजा जमाते ही हमारे देश की स्वाधीनता को अपनी कूटनीति के तिल-तिल एवं प्रच्छन्न प्रयत्नों से कुचल डाला। आज वैसा करने की मुझे आवश्यकता नहीं लगी, क्योंकि हमारे सम्बन्ध बदल गए हैं। वैयक्तिक

पात्रों के सामूहिक उद्देश्य की एक धारा नाटक में मिलेगी, जिसे दिखाने मैं चला हूँ।

बहुत दिन पहले शायद १९२१-२२ में असहयोग आन्दोलन के समय चित्तरंजन दास के त्याग पर एक नाटक लिखा था। वह खेला भी गया। मैंने स्वयं सी० आर० दास का अभिनय किया था। लगातार कई दिनों तक नाटक का नशा लोगों पर छाया रहा, किन्तु आज मेरे पास वह नाटक नहीं है। मैं अपनी लापरवाही प्रकृति के कारण उसे सँभालकर नहीं रख सका। इस दृष्टि से यह मेरा दूसरा राजनीतिक नाटक कहा जायगा।

यह नाटक चार दृश्यों में समाप्त हुआ है तथा अंक एक। ऐसी अवस्था में यह एकाकी नाटक भी कहा जा सकता है। किन्तु मैं इसे पूर्ण नाटक के रूप में ही स्वीकार करता हूँ, क्योंकि एकांकी नाटक का कोई और लक्षण इस नाटक में नहीं है। कथा-उपकथाओं की अन्विति तथा कई दृश्य-विधानों मे संगति होने के कारण यह अपने में पूर्ण है।

दिल्ली
१० मई, १९५३

उदयशंकर भट्ट

पहला दृश्य

परदा उठते ही बँगले का बाहरी भाग दिखाई देता है। आठ-बारह के आकार का कमरा, उतना ही लताच्छादित बरामदा। बरामदे में तीन-चार मोढ़े, कुरसियाँ और एक आरामकुरसी पड़ी है। बरामदा टीन से ढका है इसलिए कभी-कभी किसी बन्दर के आ कूदने पर एकबारगी हिल उठता है और ज़ोर से धमाके की आवाज़ आती है। कमरे में एक खाट और कुरसी-मेज हैं। कमरे के पश्चिम की तरफ एक दरवाजा है, जो बाथरूम को जाता है। यह आउट हाउस मिस्टर मनोहरसिंह के बंगले का एकान्त भाग है।

मनोहरसिंह तीस वर्ष का व्यक्ति, दुहरा शरीर, चौड़ी छाती, नुकीली और तनी हुई मूँछें, बड़ी-बड़ी और शरारत-भरी आँखें, चौड़ा माथा। अक्सर निक्कर, ऊँचे मोज़े, फुल-बूट और खाकी कमीज में दिखाई देता है। जब चलता है तो धीरे-धीरे और चुपचाप। बाहर से मौन और हृदय में अपने ध्येय के प्रति सजग। वह खुफिया विभाग में सरकारी अफसर है। मनोहर सिगरेट का शौकीन है। कभी-कभी पाइप भी पीता है।

उसकी पत्नी वीणा पच्चीस वर्ष की तरुणी; लम्बा, गोरा शरीर, सुन्दर और आकर्षक आँखें। ठोढी उठी हुई जो उसके विचारों की दृढ़ता का परिचय देती है। चौड़ा गोल मुख। प्रायः साड़ी पहने रहती है। पैरों में चप्पल, अँग्रेजी की ऊँची शिक्षा पाए हुए। हाथ में कोई-न-कोई अखबार या पुस्तक।

इस समय बरामदे में उसी की उम्र का एक युवक दिवाकर पैर फैलाए आरामकुरसी पर बैठा है। उदास, म्लान, उतरा हुआ चेहरा।

बार-बार उसे खाँसी उठती है। दिवाकर स्वभाव से उग्र, निर्भय, इकहरे बदन का व्यक्ति है। बिखरे हुए बाल। उभरा हुआ माथा, जिस पर चिन्ता की रेखाएँ दिखाई दे रही हैं। लम्बी आर्यन कट नाक, बड़ी-बड़ी आँखें, जो भौंहों के बालों से ढकी रहती हैं। खुरदरी और तेज आवाज़। फिर भी चेहरे पर एक प्रकार का तेज है। स्वभाव से सजग और फुर्तीला। इस समय वह मैली कमीज़ और पतलून पहने है। हाथ में एक अखबार है। किन्तु मालूम होता है अखबार के ऊपर उसका उतना ध्यान नहीं है और वह अन्तर्मुख होकर कुछ सोच रहा है। फिर कभी अखबार देखने लगता है। खांसी आने पर जेब से दवा की पुड़िया निकालकर एक टिकिया मुँह मे रख लेता है।

मनोहरसिंह उसकी बाईं ओर एक कुरसी पर बैठा उसकी हालत देख रहा है। और जब उसे खाँसी आती है तब दिवाकर की दशा देखकर जैसे मनोहर की आँखों मे भावुकता छा जाती है। वह दिवाकर की पीठ पर हाथ फेरने लगता है। फिर अपने पूर्व रूप मे तनकर बैठ जाता है। समय प्रातःकाल ९ बजे। एक नौकर उनके सामने आता है।

मनोहर (उसी गम्भीरता से) क्या कहा?

धोंधू दस बजे मरीजों को देखकर आएँगे। पूछ रहे थे कौन बीमार है।

मनोहर (नौकर की ओर देखते हुए) फिर?

धांधू मैंने कह दिया साहब के कोई मेहमान आए हैं। वही बीमार है।

मनोहर दस बजे। (स्वतः) मैं तो इससे पहले ही चला जाऊँगा। (इशारे से) चाय ले आ। (दिवाकर से) ओवल्टीन डालकर एक प्याला चाय पी लो या एक अण्डा ले लो।

दिवाकर चाय पी लूँगा। आमलेट बनवा लो या उबला हुआ अण्डा भी ठीक रहेगा।

मनोहर (नौकर से) सुन लिया, जा जल्दी से ले आ।

धाधू जी अच्छा। (चला जाता है।)

दिवाकर (मनोहर की ओर तीखी निगाह से देखता हुआ) जब आग और पानी इकट्ठे हो जाते हैं मनोहर, तब पानी की भाप बन जाती है पर आग की शक्ति भी क्षीण हो जाती है। दोनों ही बदल जाते हैं। पर पानी ही ज्यादा बदलता है।

[मनोहर सुनता रहता है और जवाब देने के बदले एक सिगरेट सुलगा लेता है। ज़ोर से एक बार धुँआ ऊपर को छोड़ देता है।]

दिवाकर क्या तुम मेरी बात को धुँए की तरह उड़ा देना चाहते हो? नहीं, यह नहीं हो सकता। तुम मेरे यूनिवर्सिटी के दोस्त हो। इस बीच में नदी की धार की तरह समय की एक चौड़ी खाई बन गई है। आदतें बदल गई हैं। हमारे उद्देश्य भी भिन्न हो गए हैं। बोलो, क्या कहते हो? अपने हाथ जलाकर दूसरे के लिए आग तैयार करना शायद तुम्हारे शास्त्र मे कोई बुद्धिमानी नहीं है। (पैर सिकोड़कर सीधा बैठ जाता है। जैसे मनोहर के अन्तरंग को पढ़ रहा हो। अखबार ज़ोर से कुरसी के हत्थे से मारकर खड़ा हो जाता है।) अब भी मैं तुम्हारी कैद में हूँ।

मनोहर (एक कश खींचकर हल्के से मुस्कराता हुआ) प्रेम की कैद में? जब अच्छे हो जाओ तब चले जाना। मुझे कोई आपत्ति न होगी। आखिर मै भी तो······

दिवाकर लेकिन तुम्हारा पेशा और इन्सानियत नदी के किनारों की तरह क्या कभी मिल सके हैं?

मनोहर मेरी कमज़ोरी ही समझ लो।

दिवाकर कमजोरी को कमजोरी मान लेने पर विश्वास दृढ़ नहीं रहता मनोहर। मेरा तो खयाल है तुम व्यर्थ की मुसीबत मोल मत लो, मुझे जाने दो। हमारी आठ-दस साल की गहराई इस मिलन को पाकर भर गई, यही क्या काफी नहीं है? मै ऐसे भी चला जाऊँगा। जब पैर काम नहीं देंगे तो साँसों से चलूँगा, आँखों से दूरी नापूँगा और कानो से तुम लोगों से दूर रहने की कोशिश करूँगा। (हँसता है।)

मनोहर (मुस्कराकर) और तभी हम लोग अक्ल की नाक से सूँघना शुरू कर देते हैं। खैर, जाने दो, डाक्टर आ रहा है। (कश लेकर) तुमने सचमुच अपनी जिन्दगी खराब कर ली। इतने इण्टैलिजेण्ट…

दिवाकर—यों क्यों नहीं कहते कि जिन्दगी सुधार ली। क्रान्ति भरे पेटों को नहीं अपनाती। वह पीड़ा, अभाव के खेत मे उगती है, असन्तोष से बढती है और नाश से फलती-फूलती है। ज्वालामुखी फटने के लिए पहाड का होना जरूरी है। (खाँसता है।) फिर तो…फिर तो कोई नहीं बचता, सभी आग बन जाते है वन-उपवन, झाड़-झखाड़ सभी। लेकिन एक बात है…

[मनोहर एक कश खींचकर उसके मुँह की तरफ देखता है।]

दिवाकर (उठकर खडा होता हुआ) बात यह है कि आग और पानी इकट्ठे नही रह सकते।

मनोहर (उसकी तरफ देखकर) इतना घबराने की क्या जरूरत है? ठीक हो जाओ, चले जाना। मेरी तुम्हारी लडाई तो रहेगी ही।

दिवाकर—(कुरसी पर बैठता हुआ) ठीक है, मैं बीमार हूँ, तुम मेरे दोस्त हो। तुमने नौकरी की अपेक्षा मेरी मित्रता का खयाल किया है।

मनोहर चाहता हूँ यह मेरी कमजोरी मुझ मे बनी रहे।

दिवाकर और न रह पाई तो शायद वह तुम्हारे पेशे की मजबूरी …खैर

मनोहर चाय आ रही है। मुँह धोलो।

[दिवाकर जाता है, वीणा आती है।]

वीणा (कुछ देर मनोहर को देखती रहकर) कौन है यह?

मनोहर क्यों?

वीणा पूछती हूँ। यह फटे हाल बीमार क्या मेरे ही घर आने को रह गया था? लोग देखेंगे तो…

मनोहर कहेंगे कि रानी के यहाँ फकीर का क्या काम? पोजीशन के एकदम खिलाफ! क्यों?

वीणा मुझे तो देखकर लगा कोई नौकर आया है नया नौकर।

मनोहर मेरा एक पुराना दोस्त है।

वीणा (चौंककर) दोस्त? मित्रता और दुश्मनी बराबर वालों में होती है।

मनोहर मैंने दया करके उसे जगह दी है।

वीणा (चौंककर) दया, क्या हमारा घर अनाथालय है? तुम तो ऐसे कभी न थे। आजीवन शराब की नदी में सौन्दर्य की नाव पर विहार करनेवाले के लिए दया कुछ नई बात सुन रही हूँ।

मनोहर तुम ठीक कहती हो, मैं खुद हैरान हूँ।

वीणा यदि कोई नया गुल न खिलने वाला हो तो हैरानी मुझे भी कम नहीं है। सुनो, मैं इसकी सेवा नहीं कर सकती।

मनोहर मैंने वचन दिया है।

वीणा यह दूसरा आश्चर्य है। आखिर पुलिस के अफसर के यहाँ, जिसका वचन हवा की तरह है और ईमान साँझ की धूप की तरह···

मनोहर (कड़ककर) क्या तुम मुझे आदमी नहीं समझतीं? मैं जानता हूँ तुम मुझसे घृणा करती हो। क्योंकि मैं शराब पीता हूँ और··

वीणा फिर भी थोड़ी-सी सुलगती आग ने तुम्हें मेरा पति बना दिया है। आग बुझ जाने पर भी उसकी जलन अमिट है, मनोहर!

मनोहर (गरजकर) याद रखो मुझे तुम-सी कई मिल सकती हैं। (पीठ थपथपाकर) रानी, बुरा न मानना!

वीणा (संयम में) पर मैं तो सोच भी नहीं सकती।

मनोहर तो जैसा मै कहता हूँ करो। यह मेरा दोस्त है। इसको कष्ट न हो। हाँ, किसका टेलीफोन था?

वीणा (हृदय की ठेस सहलाकर ऊपरी मन से) मि० ट्यूडर का, बुला रहे हैं।

मनोहर कह देतीं, हैं नहीं।

वीणा शायद कोई जरूरी काम होगा। मै क्या जानती थी, कह दिया,

आ रहे हैं।

[मनोहर उठकर चला जाता है। वीणा उसकी कुरसी पर बैठ जाती है। हाथ में एक किताब है। किताब के पन्ने उलटती है। मन नहीं लगता। दिवाकर आता है। वीणा जैसे उससे बात करना चाहती है, लेकिन संकोच है।]

दिवाकर (अखबार उठाकर, कुरसी पर सीधा बैठता हुआ) मैं मनोहर का मित्र हूँ। उसका यूनिवर्सिटी का मित्र।

वीणा अच्छा, लेकिन आजकल आप बीमार हैं। कब से भला ?

दिवाकर बीमारी को मोल लेने नहीं जाना पड़ा। बलात् मैंने उसे बुला लिया है। जब आदमी नदी में तैरने लगता है तो जैसे सरदी से देह काँपने लगती है।

वीणा (कुछ न समझकर) जी !

[नौकर चाय लेकर आता है और कमरे में से मेज लाकर सामने रख देता है। वीणा चाय तैयार करके प्याला देती है।]

दिवाकर आज बहुत दिनों बाद इतनी फुरसत से चाय पी रहा हूँ और बहुत दिनों बाद इतनी बेचैनी से भी।

[वीणा बात न समझकर किताब के पन्ने उलटने लगती है और उचटती निगाह से दिवाकर की तरफ देखती है। दिवाकर अण्डा खाने लगता है।]

दिवाकर आप भी लीजिए न।

वीणा जी, कुछ और नहीं लीजिएगा ? टोस्ट, मक्खन, शहद ?

दिवाकर नो, थैंक्यू। यही काफी है। मनोहर चुप्पा है, लेकिन शायद आदमी बुरा नहीं। यह ट्यूडर आजकल क्या है ?

वीणा यहाँ की इण्टैलिजेन्स ब्राँच का इन्चार्ज। यही मनोहर का बॉस है।

दिवाकर हूँ। कुछ नये आदमी भी पकड़े गए हैं ? (चाय पीने लगता है।)

वीणा रोज ही और न पकड़े जायें तो पुलिस और ये इण्टैलिजैन्स वाले क्या करें ? पर आजकल तो एक की ही तलाश है।

दिवाकर (मुस्कराता हुआ) दिवाकर की ?

वीणा आपने कैसे जाना ?

दिवाकर (बात को टालता हुआ) यों ही नाक से सूंघने की बजाय आँखों से सूँघना भी महत्त्व का होता है। (आराम से बैठकर) यह दिवाकर की तलाश इतनी तेजी से क्यों हो रही है ?

वीणा उसने कई अफसरों की हत्या की है। कानून तोड़कर सरकार को उलटना चाहा है। वह क्रान्तिकारी है, घोर क्रान्तिकारी ! अभी-अभी डाइनामाइट से रेल का पुल उड़ा दिया।

दिवाकर (आश्चर्य से) अच्छा !

वीणा और भी बहुत से अपराध उसने किए हैं। मैंने तो···

मनोहर (नेपथ्य से) मैं अभी आया, वीणा ! डाक्टर के आने से पहले आ जाऊँगा।

दिवाकर (कुछ देर चुप रहकर) क्या वाकई ?

वीणा उसके खिलाफ और भी कुछ होगा, बड़ा भयंकर है वह। पाँच हजार का इनाम है उसे पकड़ने के लिए।

दिवाकर (ऊपरी मन से) यह अच्छा है। जो कोई भी उसे पकड़ेगा उसे पाँच हजार मिलेंगे। क्या बुरा है। (वीणा की तरफ देखता हुआ) तब तो बड़ा खौफ़नाक है वह। आपका क्या खयाल है ?

वीणा यही कि वह बुरा आदमी है।

दिवाकर क्या आप समझती हैं कि यदि मि० मनोहर उन्हें पकड़ लें तो उन्हें भी पाँच हजार का इनाम मिलेगा ?

वीणा वह दिन बड़ी खुशी का होगा। तरक्की होगी सो अलग। आप आराम करेंगे ?

दिवाकर (कुछ देर चुप रहकर) मनोहर मेरे यूनिवर्सिटी के साथी हैं। हम दोनों साथ-साथ पढ़े हैं।

वीणा यह कह रहे थे, आप……

दिवाकर दिवाकर भी हम लोगों के साथ पढ़ा करता था।

वीणा (अब तक ऊब रही थी। केवल अतिथि का खयाल करके उठते हुए भी बैठ जाती है। 'दिवाकर' नाम सुनकर उत्सुक हो उठती है।) दिवाकर! तो क्या वह पढ़ा-लिखा भी है?

दिवाकर पोलिटिकल साइन्स में उसने एम० ए० किया है।

वीणा- तो वह सरकार के खिलाफ काम क्यों करता है, इतना पढ़ा-लिखा होकर?

दिवाकर चाहता तो उसे भी मनोहर जैसी या इससे अच्छी नौकरी मिल सकती थी।

वीणा- (भौंहें चढ़ाकर) मैं ऐसे आदमियों को बिलकुल नापसन्द करती हूँ।

दिवाकर ऐसे आदमी किसी की पसन्द पर नहीं चलते। ऐसे तो लोगों में पसन्द पैदा करते हैं।

वीणा (तपाक से) क्या मतलब आपका?

दिवाकर (लापरवाही से) मतलब वही, जो आप अभी तक नहीं समझ पाईं। आखिर आप क्या समझती हैं। कुछ लोग राह बनाते हैं बाकी लोग उस पर चलते हैं। ऐसे लोग अपनी धुन के पक्के होते हैं। आपको किस नाम से पुकारूँ?

वीणा मेरा नाम वीणा है। (बात बदलकर) लेकिन यह कोई धुन भी तो हो। देश-भक्ति के नाम पर हंगामा खड़ा करना, लोगों को तंग करना, लूटना, जान से मार देना, पुल उड़ाना, गिरोह बनाकर सरकार को उलटने की तैयारी करना।

दिवाकर (खड़ा होकर लता के पत्ते छूता हुआ एक फूल तोड़ लेता है) नदी जब बहने लगती है तो उसके दोनों किनारे अपने-आप बन जाते हैं। कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो दिवाकर की बात को पसन्द करते होंगे।

वीणा आप इसे पसन्द करते हैं?

दिवाकर (लापरवाही से हँसता हुआ) मेरी पसन्द भी कोई गिनती में है ? मान लीजिए मैं पसन्द करता हूँ, तो क्या होगा ?

वीणा (तुनककर) मैं विश्वास नहीं करती। शायद कोई भी भला आदमी इसे पसन्द नहीं करेगा। आप मानेंगे, मेरे पति काफी पढ़े-लिखे हैं, फिर उन्हें भी यह बात पसन्द नहीं है।

दिवाकर क्या आप यह नहीं मानतीं कि आपके पति ने अपना दिमाग, अपनी ताकत, अपनी सूझ-बूझ एक बड़ी ताकत के हाथ बेच दी है और उसके बदले में यह सुख, यह वैभव, यह आराम आपको मिला है !

वीणा इसमें कोई नई बात नहीं है। सभी तो ऐसा करते हैं। आप भी कहीं-न-कहीं नौकर होंगे ही ?

दिवाकर (बात को बदलता हुआ) बिलकुल बिलकुल, यह आप सच कह रही हैं। लेकिन आप मानेंगी कि सरकार से भी एक बड़ी ताकत है। वह है हमारा देश, हमारी मातृभूमि।

वीणा मातृभूमि ! तो देशभक्ति का पेशा करते हैं आप ?

दिवाकर (हँसकर) खूब, सचमुच देशभक्ति आजकल एक पेशा है जो प्लेटफार्म से पैदा होकर बैंक बैलेन्स में समाप्त हो जाता है।

वीणा (बात बदलकर) आपने तो देखा होगा कैसा आदमी है वह ? खूब तगड़ा मोटा, भयंकर होगा। हमारे पुलिस के आदमी उससे डरते है। कहते हैं पिस्तौल का निशाना उसका अचूक होता है।

['वीणा! वीणा!' कहकर कोई आवाज लगाता है। वीणा उठकर चलने लगती है।]

मैं अभी आई। (चली जाती है।)

[बरामदे के दूसरे कोने पर वीणा और उसकी सखी कान्ता आती है। दिवाकर खाँसता-खाँसता बाथरूम में चला जाता है।]

वीणा अरे कान्ता, बहुत दिनों बाद देखा री ?

कान्ता तुझे बुलाने आई हूँ। आज मेरा जन्मदिन है। शाम को पाँच बजे चाय, कुछ गाना-बजाना होगा। मैं चाहती हूँ तेरा डान्स हो।

सामान सब आ जायगा। उनकी (पति की) भी इच्छा है। अपने उनको भी लेती आना, मैं उन्हे भी निमन्त्रण देने आई हूँ।

वीणा मुश्किल है। इधर एक बीमार मेहमान है। उधर उन्हें काम भी है आजकल। ये लोग पकड़-धकड़ मे लगे हुए है। कोशिश करूँगी।

कान्ता नहीं, नहीं, जरूर आना। कौन मेहमान है?

वीणा कोई उनके पुराने दोस्त हैं। न जाने कहाँ से पकड़ लाए हैं। न कपड़े हैं, न बिस्तर। शायद कपड़े चोरी चले गए है। जो भी हो, बीमार हैं, बहुत बीमार।

कान्ता (मेहमान की ओर दूर से देखती हुई) इन दोस्तों के मारे नाक मे दम है। लेकिन ये तो वाकई बड़े फटे हाल हैं। तुम्हारे इस मेहमान की आँखें इतनी तेज हैं। खैर, तो तुम्हारा 'डान्स' पक्का है। और भी लोग आ रहे हैं। इन अपने मेहमान को न ले आना कहीं। बड़े-बड़े आदमी आ रहे हैं।

वीणा (तुनककर) गरीब क्या आदमी नहीं होते?

कान्ता नहीं, तुझे जरूर आना होगा।

वीणा अच्छा देखा जायगा।

कान्ता रात को खाना भी वहीं होगा। अच्छा मैं चलूँ। तेरे मेहमान कुछ अजीब-से हैं। बड़े घूर-घूरकर देख रहे थे। ऐसे आदमी मुझे बुरे लगते हैं।

वीणा लेकिन मुझे तो नहीं लगते।

दिवाकर (लौटकर) देखिए, मिसेज मनोहर··(जोर से खाँसने लगता है दोनों उधर देखती हैं।)

वीणा (जरा आगे बढकर) क्या मुझसे कह रहे हैं, कहिए। बहुत खाँसी आती है आपको।

दिवाकर (कुरसी पर बैठकर) मुझे पाजामा या धोती चाहिए ताकि ये कपड़े धो डालूँ, बहुत मैले हो गए हैं।

वीणा धोती? (संकोच से) ठहरिये। घोंघू, ओ घोंघू!

घोंघू (आकर) जी!

वीणा ज़रा, मेरे साथ आ। (कान्ता से) मैं अभी आई। (कमरे में चली जाती है।)

दिवाकर (स्वतः) न जाने क्या होने वाला है। जीवन की साँसों से नई दुनिया सजाने चला था, पर अब तो साँसों का भी भरोसा टूटता जा रहा है। मनुष्य भावनाओं का पुतला है। (रुककर) विचारों से जीवन बनता है, लेकिन देखता हूँ, जैसे गुलामी के भीतर से हँसी फूट रही है। जैसे सड़ांद भरे तालाब में कमल हँस रहा हो। (थोड़ी देर के बाद) क्या एक चना भाड़ फोड़ सकता है? (कुछ देर चुप रहकर) क्यों, एक सूर्य सारे जगत् को प्रकाशित नहीं कर सकता? (खाँसने लगता है।)

कान्ता वीणा, ओ वीणा! देख तो।

दिवाकर (कान्ता की ओर देखता हुआ) घबराइए मत, भीतर के तूफ़ान बाहर निकल रहे हैं।

[वीणा दौड़कर आती है। दिवाकर को दशा देखने लगती है।]

वीणा कपड़े आप रहने दीजिए, मैं धुलवा दूँगी।

दिवाकर (थोड़ी देर बाद) अब मैं ठीक हूँ, वीणा देवी। अक्सर साहस के काम की परीक्षा बीमारी और मौत की सूरत में आती है। मैं परीक्षा दे रहा हूँ न?

वीणा (कुछ भी न समझकर) आपको बड़ा कष्ट है।

दिवाकर (हँसता हुआ) मुझे कोई कष्ट नहीं है। कष्ट सहने के लिए मरने से भी ज्यादा साहस की जरूरत है। आप अपनी सखी से बात कीजिए। मैं ठीक हूँ।

वीणा ये कपड़े लीजिए।

[दिवाकर कपड़े लेकर बाँथरूम चला जाता है।]

कान्ता कौन हैं ये तुम्हारे मेहमान? अपने-आप बोलते हैं, सवाल करते हैं और जवाब भी देते हैं। लगता है इनके भीतर बहुत कुछ है जो उबल-उबल आता है।

वीणा —तू सच कहती है। पर न जाने कौन हैं ये ? बुरे नहीं लगते।

कान्ता (हँसकर) जो बुरे नहीं लगते वे ही एक दिन अच्छे लगने लगते हैं, वीणा। ज़रा सँभलकर रहियो। अच्छा, मैं चलूँ।

वीणा पगली !

[कान्ता जाती है। मनोहर प्रवेश करता है।]

यह तुम्हारे कैसे दोस्त हैं जी ?

मनोहर क्यों, क्या बात है ?

वीणा —वैसे ही पूछती हूँ। आदमी असाधारण है।

मनोहर (टालता हुआ) तुम इसको जानोगी तो दंग रह जाओगी। खैर, जाने दो। डाक्टर नहीं आया ?

वीणा दंग रह जाओगी ? क्या मतलब ? फिर बताओ न कौन हैं ? डाक्टर अभी नहीं आया।

मनोहर और वह कहाँ हैं ?

वीणा बाथरूम गये हैं। तुम उदास-से क्यों दिखाई दे रहे हो ?

मनोहर (लम्बी साँस लेकर) कुछ नहीं, वीणा। कुछ नहीं। (हृदय के भाव भीतर ही दबाकर) मुझे शायद कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ेगा।

वीणा क्यों ? क्या दिवाकर को पकड़ने के लिए ?

मनोहर साहब कहता है उसका पकड़ना निहायत जरूरी है। वह यहीं कहीं है।

वीणा क्या यहीं इसी शहर में ? पर यह तो बताओ कि यह हैं कौन ? कपड़े भी नहीं हैं इनके पास।

मनोहर कह तो दिया मेरा एक दोस्त है, मुसीबत में पड़ा हुआ, बस।

वीणा नाम क्या है ? क्या करते हैं ? कुछ हम भी तो जानें ?

मनोहर जाओ, डाक्टर को टेलीफोन करो।

[वीणा जाती है। दिवाकर आता है।]

दिवाकर अबज़रा तबियत हल्की हुई। आज एक महीने के बाद

नहा रहा हूँ, मनोहर।

मनोहर कपड़े रख दो, सुखवा दिए जायँगे।

दिवाकर (आराम कुरसी पर बैठकर) मैं भी एक सिगरेट पिऊँगा।

मनोहर लो। लेकिन तुम्हें तो मैं पहली बार देख रहा हूँ पीते।

दिवाकर (सिगरेट जलाकर एक कश खींचता हुआ) मनुष्य के भीतर शक्ति सीमित होती है। जब लगातार काम करना पड़ता है तब उसे बराबर बनाए रखने के लिए आदमी को उत्तेजक चीजों का सहारा लेना पड़ता है। 'ए यूजलेस लाइफ इज एन अर्ली डैथ।' काम ही तो जिन्दगी है। (खाँसता है।)

मनोहर गुड। अरे फिर खाँसी उठी? (पास जाकर उसकी पीठ पर हाथ फेरता है) देह गरम है, फिर नहाए क्यों? (वीणा आती है) क्या कहा डाक्टर ने?

[दिवाकर को खांसी जोर से उठ रही है।]

वीणा डाक्टर चल दिया है, आता ही होगा। तुम जरा पीठ पर हाथ फेरो। मैं तब तक द्राक्षासव की एक खुराक लाती हूँ। लो, डाक्टर आ गए। (डाक्टर आता है।)

मनोहर आइये, डाक्टर।

डाक्टर क्या बात है?

मनोहर खाँसी बहुत आती है। कुछ देह भी गरम है। शायद बुखार हो। अभी नहा लिए।

[डाक्टर स्टेथस्कोप निकालकर पीठ, छाती देखता है। फिर थर्मामीटर मुँह में लगाता है। नाड़ी की गति देखता है। फिर आँखें और हलक टटोलता है।]

डाक्टर कौन हैं यह आपके?

मनोहर मेरे मित्र। इनको जल्दी ठीक हो जाना चाहिए, डाक्टर।

डाक्टर हूँ। (चिन्तायुक्त मुद्रा में सोचता है।)

मनोहर (घबराकर) क्या सीरियस है, थाइसिस?

डाक्टर अभी तो नहीं पर जल्दी हो सकती है। सिम्टम्स उभर रहे हैं। मालूम होता है काम से सारा शरीर टूट गया है। खुराक भी नहीं मिली। थकावट बहुत ज्यादा है। आराम की ज़रूरत है।

मनोहर आप दवा दीजिए। आराम की व्यवस्था मैं कर दूँगा।

डाक्टर मैं दवा दूँगा। खाँसी दूर हो जायगी। आराम चाहिए। कम्प्लीट रेस्ट। (डाक्टर नुसखा लिखकर देता है) यह दवा मगवा लीजिए। इसमें ताकत की भी दवा है। ज़रा हवा से बचाइए। फलों का रस। दूध।

मनोहर ठीक है। घोंघू (घोंघू आता है) जाकर दवा ले आ।

दिवाकर क्या मुझे तपेदिक है, डाक्टर? फिर मैं यहाँ नहीं रहूँगा। मैं चला जाऊँगा। शायद निकम्मेपन से भरी मेरी बुद्धिमानी ने मनोहर को मुग्ध कर दिया है। डेमागॉग्स एण्ड एजिटेटर्स आर वैरी अनप्लेजेण्ट, बट दे आर इन्सीडेन्ट टू ए कन्ट्री लाइक दिस. आई एम एन एक्सीडेण्ट, डाक्टर।

डाक्टर (उत्सुकता से) एक्सीडेण्ट?

दिवाकर (हँसकर) प्रत्येक वह व्यक्ति जो समाज से, सरकारी कानून से टकराता है एक्सीडेण्ट, दुर्घटना है।

डाक्टर (मनोहर की तरफ देखकर) गुड। (दिवाकर से) जिन्दगी की हर मशीन को टकराने की जरूरत है। धक्का लगाने की ज़रूरत है। आप आराम कीजिए।

दिवाकर मेरे कोश में आराम लग्ज़री है और काम उथल-पुथल, डाक्टर।

डाक्टर गुड। आप तो फिलासफर मालूम होते हैं।

दिवाकर मैं जो मालूम होता हूँ, वह नहीं हूँ, और जो नहीं मालूम होता, वही हूँ। (हँसता है।)

डाक्टर यानी?

मनोहर (डरकर) जाने दीजिए, डाक्टर, फिर कभी।

[हाथ पकड़कर डाक्टर को ले जाता है।]

वीणा (पास आकर) सचमुच आपकी बातें बड़ी मजेदार हैं।

दिवाकर और मैं ? (वीणा एकदम घबरा जाती है। दिवाकर पछताता हुआ-सा) क्षमा कीजिए, मैंने वैसे ही कह दिया।

वीणा (भीतर-ही-भीतर उसकी प्रतिभा से प्रसन्न होकर) नहीं, नहीं। कोई बात नहीं।

दिवाकर (आरामकुरसी पर बैठकर) मैं ज्यादा दिन नहीं रहूँगा।

[मनोहर आता है।]

मनोहर (वीणा से) देखो, उधर कोई तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

[वीणा जाती है।]

(दिवाकर से) तुम्हें आराम चाहिए। आराम करो।

दिवाकर वह तो जब से मैं आया हूँ तभी से कर रहा हूँ, मनोहर। मुझे तुमसे एक बात कहना है।

मनोहर हाँ, कहो।

दिवाकर साफ-साफ ही कहना होगा।

मनोहर यदि यही बात है तो दुहराने की जरूरत नहीं है।

दिवाकर लेकिन यह कितना बड़ा रिस्क है। मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से तुम किसी मुसीबत मे पड़ो। मैं घोर क्रान्तिकारी हूँ, बागी हूँ, तुम्हारी सरकार की नजर में। और वह किसी-न-किसी तरह पकड़कर हमेशा के लिए मुझे दफना देना चाहती है।

मनोहर सही है।

दिवाकर और तुम उस मशीन के पुर्जे हो। तुमसे भी यही आशा की जाती है कि मुझे पकड़कर उसके हवाले कर दो। इससे अच्छा कोई अवसर नही आयगा। वैसे भी मैं इस बीमारी से तग आ गया हूँ।

मनोहर (दिवाकर के कन्धे पर हाथ रखकर) तुम मेरे दोस्त हो। मेरे साथी हो। उस पुलिया के पास अँधेरे में बुखार में बेहोश पड़े थे। पहले मेरे जी मे आया कि मै तुम्हें पकड़कर ले चलूँ। पर मैंने नौकरी की है, मनुष्यता नहीं बेची। पहले मुझे मालूम भी नहीं था कि तुम ही मेरे

साथी दिवाकर, क्रान्तिकारी हो। आज मुझे गर्व है।

दिवाकर मैं कृतज्ञ हूँ। पर मैं चाहता हूँ कि तुम अपने पेशे के प्रति ईमानदार रहो। तुम मुझे पकड़वा दो। मैं काम पूरा नहीं कर सका। मैं तुम्हारी सरकार का तख्ता नहीं उलट सका। मैं जनता को सरकार के खिलाफ नहीं बना सका। फिर भी हमने एक जनमत तैयार कर दिया है। लोगों मे नये समाज, नई दुनिया, नये तरीके की विचारधारा पैदा कर दी है। आज वह समय आ गया है कि गदर के जमाने से अंग्रेजों के प्रारम्भ किए विद्रोह को जारी रखें। (खाँसने लगता है।)

मनोहर तुम बीमार हो, अच्छे हो जाओ, दिवाकर !

दिवाकर क्या तुम्हारी भोली पत्नी वीणा जानती है मैं कौन हूँ ?

मनोहर नहीं।

दिवाकर लेकिन यह बात उससे छिपी नहीं रह सकती।

मनोहर वह मुझसे डरती है। उसके जान लेने पर भी तुम्हारी हानि नहीं होगी।

दिवाकर क्या तुम नहीं जानते कि मुझे घर मे रखकर तुम एक बडी गलती कर रहे हो ? मैं तुम्हें नुकसान नही पहुँचाना चाहता, मनोहर।

मनोहर मैं तुम्हारे त्याग से प्रभावित हूँ, दिवाकर। तुम्हारे कष्ट देश के भले के लिए हैं। तुम देश की सेवा मे मर रहे हो, जब कि मैं अपने पेट के लिए जी रहा हूँ। उस पुलिया के पास अँधेरे मे बेहोश पड़ा देखकर पहले तुम्हे पकड लेने का खयाल आया, लेकिन मेरी आत्मा ने मुझे धिक्कारा, मुझे एक धक्का-सा लगा। मैं चौंक उठा। मुझे लगा तुम्हे पकड़कर मैं अपने एक मित्र के साथ, देशभक्त के साथ बगावत कर रहा हूँ। मैं खुद चाहता हूँ हम गुलामी की जंजीर से छूट जायँ।

दिवाकर—(मनोहर की आँखों में झाँककर) तब तुम्हे खुल्लमखुल्ला मैदान मे आ जाना चाहिए। (अखबार देखने लगता है।)

मनोहर उसके लिए साहस चाहिए। उतना साहस मुझ मे नहीं है। लेकिन मैं तुम्हारे काम में क्या सहायता की एक कड़ी नहीं बन सकता ?

मेरे मन में बड़ा संघर्ष हो रहा है। नेकी मुझे नोचती है। मेरा पेशा मुझ पर हावी हो रहा है।

[वीणा दौड़ी आती है। उसके हाथ में ऊन और सलाई है।]

वीणा बड़े साहब का टेलीफोन आया था। पहले तो पूछा मनोहर क्या कर रहे हैं। जब मैंने बताया कि वे बीमार मेहमान के पास हैं तो थोड़ी देर चुप रहकर बोले, "उनसे कहना तैयार रहें। बागी इसी शहर मे है। उसे आज ही पकड़ना है। नींद हराम कर दी है उस पाजी ने।"

दिवाकर सचमुच ? सचमुच ?

वीणा (दिवाकर से) आप नहीं जानते, पिछले छः महीने से उसने सारे इलाके में तहलका मचा दिया है।

मनोहर (दिवाकर की तरफ देखकर मुस्कराता है और वीणा के देखने पर गम्भीर हो जाता है) क्या बताएँ इन क्रान्तिकारियों के मारे नाक मे दम है, साहब। पकड़ना ही होगा। इनाम के लालच में मुखबिर दौड़-धूप भी काफी कर रहे हैं। (टेलीफोन की घंटी बजती है) जाओ वीणा, ज़रा सुनो।

वीणा आप ही जाइए। मैं कहाँ तक जवाब दूँगी। ट्यूडर का टेलीफोन होगा।

मनोहर अच्छा, मैं ही जाता हूँ। घोंधू अभी तक दवा लेकर नही लौटा ?

वीणा आता ही होगा। (घोंधू आता है) लो, वह आ गया।

मनोहर दवा दे दो। मैं अभी आया।

घोंधू यह लीजिए दवा। (वीणा नुस्खा देखकर दवा देती है।)

वीणा—(दवा देती हुई) आप सोचते होंगे, "मैं अच्छा आया। मनोहर ठीक तरह से मेरे पास बैठ भी नहीं पाते।" क्या किया जाय, इस डिपार्टमेण्ट की नौकरी ही ऐसी है और उस पर इन क्रान्तिकारियों के मारे नाक में दम है। अजीब परेशानी है। दवा पी लीजिए। (देती है।)

दिवाकर (भीतर-ही-भीतर मुस्कराकर) मुझे क्या असुविधा होगी,

वीणा देवी ! यदि जीवन को बनाये रखना है तो काम को महत्त्व देना ही होगा।

वीणा अरे घोंघू, देख, एक छोटी मेज उठा ला, उसी पर यह दवा की शीशी रख दे। दो-दो घण्टे बाद दवा लेने को डाक्टर ने कहा है। हाँ, एक बात बताइए। (वहीं पास की कुरसी पर बैठकर) वह दिवाकर आपका तो क्लासफैलो रहा है। क्या मिस्टर मनोहर के साथ भी वह पढ़ा है? (बुनने लगती है) तो उनका भी साथी होगा?

दिवाकर (गम्भीर होकर) जहाँ तक मुझे याद है वह मनोहर को जानता है और अच्छी तरह से जानता है।

वीणा तब तो यह और भी बुरी बात है। जब वह जानेगा कि यह वही हैं...

दिवाकर (अखबार से पंखा करता हुआ) क्यों? तब क्या होगा? इससे तो फायदा ही है कि मनोहर उसे जल्दी पहचान लेंगे।

वीणा (बुनते हुए) नहीं, नहीं, आप नहीं समझे! वह बहुत बड़ा निशानेबाज भी तो है।

दिवाकर निशानेबाज तो जरूर है। पिछले दिनों वह एक बार ऐसे ही घिर गया। चारों ओर पुलिस के आदमी, और वे दो एक पेड़ पर छिपे हुए थे कि घिर गए। कोई उपाय नहीं था। इसी समय दोनों रिवाल्वर लेकर पेड़ से दो तरफ़ कूद पड़े और चारों ओर फायर करते भाग गए। पुलिस वालों की हिम्मत ही नहीं हुई कि वे उनका पीछा करते। पास ही घना जंगल था। जंगल का तो दिवाकर शेर है।

वीणा (बुनना बन्द करके) और वे दोनों भाग गए, इतनी पुलिस के होते हुए भी?

दिवाकर (उसी तरह गम्भीरतापूर्वक वीणा को देखकर) हाँ।

वीणा वह दूसरा कौन था?

दिवाकर उसका साथी, बल्कि गुरु, जिसने क्रान्तिकारी दल का निर्माण किया।

वीणा स्वामी ?

दिवाकर हाँ स्वामी। वे गेरुए कपड़े जरूर पहनते थे पर स्वामी नहीं थे। वैसे परम देशभक्त थे वह स्वामी।

वीणा कृपा करके स्वामी के सम्बन्ध में मुझे बतलाइए। वह कौन थे, क्यों उन्होंने...

दिवाकर- बहुत तो मैं भी नहीं जानता, लेकिन सुना है वह कोई बहुत समृद्ध परिवार के लड़के थे। विलायत में पढ़ते थे। वहाँ रहते उन्होंने सारे देश-विदेश घूम डाले। रूस, जापान, चीन, बर्मा सभी जगह उन्होंने विश्व-मानव-संस्था नाम की एक संस्था कायम की। फिर हिन्दुस्तान आए।

वीणा (सुनना छोड़कर) विश्व मानव-संस्था, यह क्या है ?

दिवाकर एक ऐसी संस्था जो परतन्त्र देशों को दासता के बन्धन से मुक्त होने में सहायता दे।

वीणा किस प्रकार की सहायता ?

दिवाकर सभी तरह की। धन की, अस्त्र की, शस्त्र की। उन्होंने कोशिश की और हिन्दुस्तान में पिस्तौल, राइफल, बन्दूक से भरा हुआ एक जहाज भी भिजवाया, लेकिन दुर्भाग्य से वह बीच में ही रोक लिया गया। जाने दो, तुम जानो इन बातों में क्या धरा है। तुम पुलिस के लोग हो।

वीणा मैं तो पुलिस की नहीं हूँ। मेरे पति पुलिस में नौकर हैं। तो क्या आप समझते हैं कि मैंने भी अपने आपको बेच दिया है। अगर कोई हर्ज न हो...

दिवाकर क्रान्तिकारियों का काम आज का नहीं है, वीणा देवी। गदर के समय से यहाँ के लोग स्वतन्त्रता पाने की चेष्टा करते रहे हैं हिन्दू, मुसलमान सभी। पराधीनता मनुष्य का अभिशाप है न ?

वीणा (मन में अन्तिम वाक्य सोचते हुए) आपकी बात सुनकर मेरे भीतर एक उफान-सा आता है।

दिवाकर इसलिए कि तुम्हारी आत्मा भी स्वतन्त्रता के लिए छटपटाती है।

वीणा न जाने किसलिए पर, भीतर-ही-भीतर कुछ होता है। फिर स्वामी ने क्या किया?

दिवाकर जब वह देश में आए और उन्होंने यहाँ की गरीबी, लोगों की भुखमरी, अज्ञान, अविद्या देखी तो उनका हृदय फूट-फूटकर रोने लगा। और तभी दूने उत्साह और साहस से उन्होंने काम करना शुरू कर दिया। देश-भर में घूम-घूमकर लोगों को समझाया और उन्हें उत्साहित किया।

वीणा (उत्तरंग होकर) बड़ा काम किया उन्होंने।

दिवाकर तब सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया, एक भाषण पर, सात साल के लिए। एक दिन वह जेल से भाग गए और छिपकर काम करने लगे। उन्हीं दिनों दिवाकर ताज़ा-ताजा एम० ए० पास करके निकला था। उसका विवाह तो हो ही चुका था। वह उनके दल में शामिल हो गया। और भी बहुत लोग थे। यह स्वामी का ही प्रभाव था कि कई जगह फौजें बिगड़ उठीं, कई जगह विद्रोह हुए। किन्तु दुर्भाग्य कि उन लोगों को पूरी सफलता नहीं मिली। एक सेना को दूसरी सेना से दबा दिया गया। कार्यकर्ताओं को गोली से उड़ा दिया गया।

वीणा ये बगावत की बातें मैंने सुनी हैं। तो क्या यह उन स्वामी का ही काम था?

दिवाकर काम करने वालों की एक कड़ी थी। स्वामी उनमें प्रमुख थे। परम विद्रोही स्वामी को आज लोग देवता की तरह पूजते हैं और सरकारी नजरों में वह थे एक भयानक डाकू। (खाँसने लगता है।)

वीणा बड़ा कष्ट होता है आपको, जाने दीजिए, जाने दीजिए।

दिवाकर ठ···ह···रि···ए··· (खाँसी रुकने पर) आज भी लोग जब उनका स्मरण करते हैं तो हृदय पवित्र हो जाता है, वीणा देवी। कितने महान् थे वह! अन्तिम दिनों में···(खाँसी)

वीणा हाँ, अन्तिम दिनों में क्या हुआ? पर रहने दीजिए, आपको कष्ट होता है।

दिवाकर अन्तिम दिनों में वह बीमार हो गए। दमा का जोर बढ़

गया। हरिद्वार से ऊपर एक वन में वह रहने लगे और एक दिन पुलिस ने उन्हें घेर लिया। जमकर लड़ाई हुई। बहुत से पुलिस के आदमी मारे गए। उनके साथी भी शहीद हुए। दूसरी बार फिर पुलिस ने आक्रमण किया। दो अफसरों को मारकर स्वयं एक गोली से मारे गए। जीते-जी हाथ नहीं आए। वह कहा करते थे, "मैं आजीवन गोलियों से खेलता रहा हूँ। गोली ही मेरे प्राण लेगी।"

वीणा (उत्सुकता से) तो क्या आप भी उनके साथ थे उस समय ? आपकी बातों से तो ऐसा ही लगता है।

दिवाकर (जैसे पकड़ा गया हो) नहीं, नहीं, यह सब मैंने दिवाकर से ही एक बार सुना था।

वीणा दिवाकर से ? तो क्या आप दिवाकर से भी मिलते रहते हैं ?

दिवाकर बहुत दिन हुए एक बार अचानक एक जगह भेंट हो गई। मैं चाहता था कि उससे बात न करूँ, उससे न मिलूँ।

वीणा (सोचती हुई) तो बुराई क्या है ? आखिर वे लोग देशभक्त भी तो किसी से कम नहीं। (मन-ही-मन कुछ बड़बड़ाती है।)

[दिवाकर चुप होकर वीणा की ओर देखता है। वीणा लम्बी साँस लेकर बुनती रहती है। फिर नजर उठाकर दिवाकर को देखना चाहती है कि दिवाकर की दृष्टि वीणा पर पड़ती है। वीणा नीची निगाह कर लेती है।]

वीणा कितने आफत के पुतले हैं ये लोग ! आग से खेलते हैं, आग से।

[दिवाकर एकदम ध्यानस्थ-सा होकर ऊपर की तरफ एकटक देखने लगता है। आँखें तेज हो जाती हैं और धीरे-धीरे उनमें से आग-सी निकलने लगती है। होंठ फड़कने लगते हैं। वीणा दिवाकर की यह चेष्टा और यह रूप देखती है। बुनना बन्द करके पास आती है।]

यह क्या हो गया आपको ?

दिवाकर (देर तक चुप रहने के बाद) कुछ नहीं, कुछ नहीं।

सोचता था जीवन के जो कई रूप हैं क्या उनमें हमारे जीवन का भी कोई अर्थ है? हम भी जीते हैं, साँस लेते हैं। तो यह जीना क्या अर्थ रखता है?

[इसी समय मनोहर का एक दोस्त लकड़ी घुमाता आता है। रामपुरी काली मखमली टोपी, वायल का कुर्ता, ढीला पाजामा, पम्प शू, उम्र तीस साल, रंग साँवला, शरीर बलिष्ठ, शराब का पैग चढ़ाए हुए, नाम चुन्नीसिंह, मुँह में पान भरा हुआ।]

चुन्नीसिंह कहाँ गये मि० मनोहरसिंह? (इतना कहकर बिना कहे दिवाकर के सामने की एक कुरसी पर जम जाता है। वीणा के जवाब देने से पहले) गये होंगे उसी चक्कर में क्यों?

वीणा जी?

चुन्नीसिंह यह साला काम भी क्या है। न दिन न रात, मनोहर चढ़े बरात। उसी चक्कर में होंगे? हम भी तो हैं साले, घोड़े की पीठ पर सवार। लेकिन काम उतना करते हैं कि आँच न आए। सब बदमाशों को अगर आज ही पकड़ लें तो कल क्या करें। मरने के लिए थोड़े आए हैं, मियाँ। नौकरी करने और हुकूमत करने आए हैं। सोचा था कुछ गपशप होगी। लेकिन हजरत गायब हैं।

दिवाकर मैं मनोहर का दोस्त हूँ।

चुन्नीसिंह दुश्मन तो मैं भी नहीं हूँ, जनाब।

दिवाकर तो इससे यह कैसे साबित हो गया कि मैं दोस्त नहीं हूँ। दोस्त और दुश्मन के बीच में एक और वर्ग है। जैसे रात और दिन के बीच में साँझ। आदमी और जानवर के बीच में वनमानस।

चुन्नीसिंह (ठहाका मारकर) खूब! जैसे आदमी और परिन्दों के बीच में तोता।

दिवाकर जो हमेशा दूसरों की बोली बोलता है।

चुन्नीसिंह खुदा कसम दिल तो करता है कहीं इनको पकड़ पाऊँ तो वहीं गोली से उड़ा दूँ। न हुआ मैं मनोहर की जगह (मूँछों पर ताव

देता है।)

दिवाकर शायद उनके मन में भी यही ख्याल आते होंगे कि मौका पाएँ तो एक-एक को गोली से उड़ा दें।

चुन्नीसिंह लेकिन वह तो बदमाश है न? चोर को क्या हक है कि वह पुलिस पर छा जाने की बात सोचे। डाकू डाके के सिवा और क्या सोच सकता है?

दिवाकर जैसे पुलिस दबदबा और अत्याचार करने के सिवा और कुछ नहीं सोच सकती।

चुन्नीसिंह (होश में आकर) क्या कहा आपने?

[वीणा घबराती है। वह जान नहीं पाती कि यह कैसा आदमी है।]

दिवाकर कोई खास बात तो नहीं कही।

चुन्नीसिंह (कुछ देर चुप रहकर) तो क्या आप कुछ बीमार हैं? शायद आपको दमे का रोग है। यह दमा भी खूब है साहब, कतई नामा-कूल बीमारी।

वीणा चाय पीएँगे?

चुन्नीसिंह वीणा, तुम भी खूब हो। अरे, चाय भी कोई पीने की चीज है। अभी दो पैग चढ़ाकर आया हूँ। रात को एक डकैती के मामले में बाहर जाना पड़ा। ठीक बारह घण्टे बाद मैं सिपाहियों को लेकर पहुँचा, ताकि डाकुओं का कहीं नाम-निशान भी न रहे। तफ्तीश की, इधर-उधर दो-चार को झाड़-झपट की। कुछ को पीटा-पाटा। अब कानूनी कार्रवाई होगी। मरते रहें साले, हमने कौन इनकी जिन्दगी का ठेका ले रखा है?

दिवाकर (चुन्नीसिंह की ओर देखकर) कानून मकड़ी के जाले की तरह है। जिसमें गरीब और कमजोर ही ज्यादा फँसते हैं और ताकतवर रुपए के चाकू से जाला फाड़कर भाग जाते हैं। शायद मैं गलत नहीं कह रहा हूँ।

चुन्नीसिंह तुम ठीक कहते हो। कानून के पहाड़ को उड़ाने वाला एक ही डाइनामाइट है रुपया। जिसके पास रुपया नहीं है वही कमजोर है। आपके पास रुपया है तो खून करके भी बच सकते हैं।

दिवाकर आपका मतलब रिश्वत से है शायद।

चुन्नीसिंह मेरा मतलब सिर्फ रुपये से है। समझे आप? रुपये से बड़े-से-बड़ा दिमाग खरीदा जा सकता है और ईमान भी। ईमान की बड़ी-बड़ी दीवारें रुपये के हथौड़े की चोट से गिर जाती हैं। आज ही पाँच सौ की बौनी हुई।

दिवाकर तो क्या आप पुलिस इन्स्पेक्टर हैं?

चुन्नीसिंह (लापरवाही से) जी जनाब। क्या आपको अभी तक नहीं मालूम हुआ? चोर और गुण्डे तो हम सूँघकर पहचान लेते हैं। आजकल आप क्या काम करते हैं?

दिवाकर आज तो बीमार हूँ और मनोहर का मेहमान। कल ठीक होने पर सोचूँगा क्या करता हूँ।

चुन्नीसिंह (चौकन्ना होकर) इससे पहले?

दिवाकर इससे पहले कानून से लड़ता था।

चुन्नीसिंह (बात न समझकर) वकील थे आप? (हँसता है) वकील भी अजीब किस्म का जानवर है?

वीणा वकील?

चुन्नीसिंह वकील उस हलवाई की तरह है जो पैसा पाकर ही अक्ल की मिठाई बेचता है। झूठ को सच और सच को झूठ बनाता है। बाजारू औरत की तरह चालाकी का सौदा करने वाला।

दिवाकर और पुलिस?

चुन्नीसिंह पुलिस खानापूरी का महकमा है। यानी पूरी खाने का महकमा। (हँसता है) नहीं-नहीं, हम लोग हैं न्याय की प्रतिष्ठा के लिए, राज मे शान्ति के लिए। हम न हों तो लोग एक-दूसरे को खा जायँ।

दिवाकर जब लोग एक-दूसरे को नहीं खाते तो आप उन्हें खाते हैं।

चुन्नीसिंह वह तो चलता ही है। आखिर न खाएँ तो काम कैसे चले? (घूमता है) ईमानदारी को मैं सफेद पोशाक की तरह मानता हूँ, जो बाहर दिखाने के लिए जरूरी है। बिना ईमानदारी की पोशाक पहने आप नेई-

मानी का कोई काम नहीं कर सकते। और बेईमानी के बगैर आप दुनिया में आराम, इज्जत से नहीं रह सकते। मान लीजिए, मैं १५० रुपया पाता हूँ। अब आजकल डेढ़ सौ में होता ही क्या है ? बीबी है, बच्चे हैं, उनकी पढ़ाई-लिखाई, शादी और ऊपरी खर्च कहाँ से चले ? डेढ़ सौ की तो मैं शराब ही पी जाता हूँ। फिर यार-दोस्त आये-गये, जश्न-महफिल अलग। कैसे काम चले ?

[एक आदमी आता है।]

आगन्तुक (चुन्नीसिंह से) सरकार, वह बनिया आया है।

चुन्नीसिंह अबे, कौन बनिया ?

आगन्तुक जिसके घर डाका पड़ा था। (पास जाकर कान में कुछ कहता है।)

चुन्नीसिंह अच्छा, मुर्गी मोटी है ! चल ! (वीणा से) मैं यह जानने के लिए आया था कि उस दिवाकर का क्या हुआ ? मैंने उसका फोटो देखा है। बड़ा फितना आदमी है। तेज आँखें, चौड़ी पेशानी, लम्बी नाक, उभरी हुई ठोडी, कद मामूली, पतला-दुबला, सुना है अचूक निशानेबाज है।

वीणा - कह दूँगी।

[नौकर पान लाकर देता है। चुन्नीसिंह पान खाकर चला जाता है। उसके पीछे दिवाकर भी अन्दर चला जाता है।]

वीणा (स्वतः) बड़ी विचित्र बात है। कुछ समझ मे नहीं आता। कौन हैं यह ? तेज आँखें, चौड़ी पेशानी, लम्बी नाक, उभरी हुई ठोड़ी, कद मामूली, पतले-दुबले। तो क्या यही दिवाकर हैं ? देशभक्त और त्याग की मूर्ति दिवाकर ? नहीं, यह नहीं हो सकता। मनोहर इतना देशभक्त नहीं हो सकता। वह हाथ में आये हुए शिकार को छोड़ नहीं सकता ! लेकिन यह अजीब बात हैं। बिलकुल अजीब। यह आदमी मामूली नहीं है। अवश्य इस आदमी का कोई सम्बन्ध उन लोगों से होगा। मेरा खयाल है मैं गलती नहीं कर रही हूँ। यही है। इन्होंने अभी तक मुझे अपना नाम भी नहीं बताया। स्वामी के सम्बन्ध की इनकी बातें ! (सोचकर) मनोहर ने यह क्या

किया ? तो क्या घर में ही साँप। नहीं मैं इसे साँप नहीं कहना चाहती। बहादुर देश-भक्त। कितना कष्ट सहा है इसने। जिन्दगी बरबाद कर दी। अपने लिए क्या किया? न जाने बीबी की क्या हालत होगी। आठ-आठ आँसू रोती होगी बेचारी। कौन है यह ? जानना ही होगा। न जाने मनोहर ने क्या सोचा है ?

[मनोहर प्रवेश करता है]

वीणा (भर्राई हुई आवाज में) मनोहर !

मनोहर क्या है, वीणा ? अरे दिवा···मेहमान की तकलीफ बढ़ गई क्या ?

वीणा (आगे बढ़कर) यह तुमने क्या नाम लिया, दिवाकर ?

मनोहर (घबराहट दबाकर) नहीं तो। दिवाकर यहाँ कहाँ से आया ?

वीणा नहीं, नहीं, यही दिवाकर है। सत्य ज्वालामुखी के समान है जो असत्य के कपट के पहाड़ फोड़कर निकलता है।

मनोहर (स्वाभाविक लापरवाही से) नहीं, नहीं, वीणा, तुम्हें भ्रम हुआ है। दिवाकर यह नहीं है। हम लोग आज रात उसे पकड़ने जा रहे हैं। आजकल दिवाकर ही दिमाग में घूम रहा है।

वीणा- मुझसे उड़ो मत मनोहर। यही वह दिवाकर है, तुम्हारा यूनिवर्सिटी का दोस्त। अभी दारोगा चुन्नीसिंह आए थे। उन्होंने भी यही हुलिया बतलाया।

मनोहर उसे कैसे मालूम ?

वीणा शायद उन्होंने दिवाकर की तसवीर देखी है।

मनोहर- (कुछ सोचता हुआ) कहाँ गये ?

वीणा -बाथ रूम। लेकिन तुमने यह क्या किया ? हम लोग कहीं के न रहेंगे।

मनोहर- (उसी शान्त भाव से) घबराने की कोई बात नहीं है। हिम्मत रखो, वीणा !

वीणा (परखने के भाव से) मुझे कुछ दिखाई नहीं देता। हम लोग

कहीं के न रहेंगे। हमारा घर जेलखाना होगा। तुमने मुझे बताया क्यों नहीं? घर में आग लगाकर दूसरों के लिए उजाला कोई नहीं करता। यह आज नहीं तो कल जरूर पकड़े जायेंगे।

मनोहर तुमसे क्या छिपाव है, वीणा! मेरे भीतर एक संघर्ष उठ रहा है। एक तरफ स्वर्ग है दूसरी तरफ मौत। (कुछ सोचकर) लेकिन उस मौत में भी मुझे खुशी की एक चमक दिखाई देती है। यही चमक मैं दिवाकर के चेहरे पर देखता हूँ। इसके साथ ही कमजोरी मुझे बार-बार नोचती है। मैं शायद जीवन की इतनी गहराई में कभी नहीं गया। मैं इतना बड़ा त्याग नहीं कर सकता। तुम्हें दर-बदर भिखारिन की तरह भीख माँगता नहीं देख सकता। नहीं, वह हमारा रास्ता नहीं है। कुछ सिर-फिरे ही यह काम कर सकते हैं। मेरे मन में तूफान उठ रहा है। मैं सोच नहीं पाता कि क्या करूँ।

वीणा इन्हें चुपचाप विदा कर दो।

मनोहर लेकिन यह बात छिप नहीं सकती। दिवाकर के पकड़े जाने पर चुन्नीसिंह ही बतला देगा कि उसने दिवाकर को मेरे घर देखा है।

वीणा फिर?

मनोहर (एकदम उछलकर) मैं सोचता हूँ क्यों न इसे गोली मार दूँ।

वीणा यह क्या कह रहे हो?

मनोहर—कह दूँगा दिवाकर को मैं फुसलाकर ले आया और जब उसे शक हुआ उसने गोली चलाई तब मैंने उसे मार दिया।

वीणा यदि तुम दिवाकर को छोड़ दो तो वह आसानी से नहीं पकड़े जायँगे। दिवाकर देवता हैं।

मनोहर (सोचकर) मैं देवता राक्षस कुछ भी नहीं जानता। मेरी गलती का प्रायश्चित यही है कि मैं उसे······

वीणा नहीं, नहीं, तुम ऐसा क्यों करोगे? ऐसा मत करो, मनोहर। क्या तुम देवता की हत्या करोगे?

मनोहर मुझे इनाम मिलेगा। अभी-अभी स्यूडर ने मुझसे कहा है कि वह छुट्टी पर जा रहा है शायद लम्बी छुट्टी पर। अगर उस समय तक दिवाकर पकड़ा गया तो उसकी जगह मेरी नियुक्ति होगी। तरक्की होगी, ऊँचा ओहदा मिलेगा। ऐसा मौका बार-बार हाथ नहीं आता रानी!

[वीणा गुम-सुम-सी खड़ी रह जाती है। मनोहर टहलता हुआ तर्क-वितर्क करता है।]

मनोहर यही मेरा निश्चय है वीणा! आज रात को।

[टेलीफोन की घण्टी बजती है। मनोहर चला जाता है।]

वीणा (दृढता से) नहीं, यह नहीं हो सकता। दिवाकर की हत्या नहीं हो सकती। मैं हर तरह से दिवाकर की रक्षा करूँगी चाहे मुझे इसके लिए कितना ही बलिदान क्यों न करना पड़े। (सोचती हुई चौंककर) क्या मैं इस पथ को नहीं अपना सकती? खैर, यह पीछे की बात है। मुझे एक देश-भक्त की रक्षा करनी होगी। मनोहर की आँखों में शरारत झाँक रही है। वह प्रलोभनों से टक्कर नहीं ले सकता। इतनी नीचता, मित्र बनाकर धोखा देना, मैं नहीं जानती थी।

[इसी समय जोर से हँसता हुआ मनोहर आता है।]

मनोहर (अट्टहास करता हुआ) खूब! यह भी खूब रही! पुलिस ने कुछ आदमियों को गिरफ्तार किया है। उनमें दिवाकर भी है। दिवाकर भी पकड़ा गया है। (फिर हँसता है) हा, हा, पुलिस का दिमाग भी खूब है!

वीणा (उत्सुकता से) क्या बात है, कौन पकड़ा गया है?

मनोहर पुलिस ने कुछ आदमियों को पकड़ा है। कहते हैं उनमें दिवाकर भी है। वह बीमार है। बोलता नहीं है। पुलिस का ख्याल है वही दिवाकर है। चलो, थोड़ी देर को पीछा छूटा। अब पहचान होगी। पता लगाया जायगा। जिन्होंने दिवाकर को देखा है वे बुलाए जायँगे। मै जरा जा रहा हूँ, वीणा।

वीणा (स्त्रीजनोचित कमजोरी से) लेकिन हमको भी तो कुछ

सोचना है।

मनोहर हमें कुछ सोचना नहीं है। 'मेरे हाथ आसमान चढ़ने की सीढ़ी आ गई है, वीणा।

वीणा शायद वहीं से नरक का रास्ता भी शुरू होता है।

मनोहर (वीणा को डाँटकर) तुम लोग सलाई से अपने पास की जालो बुन सकती हो दूर की नहीं। (आगे बढ़ता है। इसी समय बंगले के पोर्टिको में एक मोटर के रुकने की आवाज आती है) कौन है?

[धड़धड़ाता हुआ 'मनोहर मनोहर' चिल्लाता हुआ ट्यूडर आता है।]

ट्यूडर हैलो, मनोहर! तुम्हारे बंगले के पीछे कौन आदमी है? 'मूविंग इन ए वैरी ससपिशस वे।' अच्छा, बहुत लोग पकड़ा गया है। (वीणा को देखकर) गुड मॉर्निंग, मिसेज़ मनोहर!

वीणा गुड मार्निंग टु यू, मि० ट्यूडर।

मनोहर वह मेरा एक बीमार मित्र है, सर! डाक्टर ने उसे टहलने को बताया है। आइये बैठिए।

ट्यूडर नहीं, नहीं, बैठने का जरूरत नहीं। इफ़ वी कुड रियली अरैस्ट दैट रोग।

मनोहर ये लोग कहाँ पकड़े गए?

ट्यूडर फोर्ट के पीछे एक झाडी में और राजेन्द्र भी। चार आदमी हैं। यू नो दिवाकर बाइ फेस आई सपोज़।

मनोहर नो, सर। [इसी समय दिवाकर आता है।]

दिवाकर—गुड मार्निंग, मि० ट्यूडर।

ट्यूडर (भरी हुई अवाज से) गुड मार्निंग।

मनोहर आप ही मेरे बीमार मेहमान हैं। आइए चलें। वीणा, तुम इनको दवा पिलाओ!

ट्यूडर (दिवाकर से) आप कैसे जानटा हम ट्यूडर हूँ?

दिवाकर (लापरवाही से) इन्टैलीजैन्स ब्रान्च के चीफ मि० ट्यूडर

को कौन नहीं जानता ।

मनोहर तुम आराम करो भाई ! आइए, साहब, चलें ।

ट्यूडर ओः, आई सी ! ओनली क्रिमिनल्स नो मी । हम उनके लिए शेर हूँ, शेर । आप कहाँ से आटा है ?

दिवाकर पढ़े-लिखे मूर्ख में विद्वान् से अधिक चमक होती है, मि० ट्यूडर ।

ट्यूडर (कुछ भी न समझकर, मनोहर से) क्या कहता है तुम्हारा दोस्त ?

मनोहर कुछ नहीं, सर । कभी-कभी मेरा मित्र दर्शन बोलता है ।

ट्यूडर दर्शन ?

मनोहर फिलासफ़ी ।

ट्यूडर ओ आई सी ! इज़ ही ए फिलासफर ?

मनोहर यस, सर ।

ट्यूडर वी आर गैटिंग लेट, मनोहर, कम आन । (दिवाकर से) 'वैल, वैरी ग्लैड टू सी यू । लेट अस सी दोज़ रेवेल्यूशनरीज़ फ़ॉर फर्दर प्रोसीजर ।'

दिवाकर धन्यवाद ।

[मनोहर ट्यूडर को लेकर चला जाता है । दिवाकर ट्यूडर को घूरता देखता रहता है ।]

वीणा आपने तो हम लोगों के प्राण ही सुखा दिए ।

दिवाकर वह मुझे पहचानने की कोशिश कर रहा था । लेकिन एक नये दिवाकर ने मुझे बचा लिया ।

वीणा क्या आपको कभी उसने देखा है ?

दिवाकर दो बार । वह झुटपुटे का समय था ।

वीणा फिर आपने ऐसा साहस क्यों किया ?

दिवाकर मुझे साहस लेने जाना नहीं पड़ता, वीणा देवी । मैं जानता हूँ आप मुझे जान गई हैं । (बात बदलकर) मैं चाहता हूँ कि वह मुझे

पहचान लेता। आपको इनाम और यश मिलता।

वीणा क्या आप हमको...

दिवाकर (लापरवाही से) क्या एक झोंपड़ी के लिए कोई बंगला छोड़ सकता है? मित्रता के एक गुण से मनोहर के पुराने अडिग विश्वास टूटे नहीं हैं।

वीणा (बनावटी क्रोध से) क्या मतलब आपका?

दिवाकर जो आप समझती हैं वही। अभी थोड़ी देर पहले आप दिवाकर को पकड़वाकर इनाम लेना चाहती थीं, यश और इज्जत पाने के लिए बेचैन थीं।

वीणा मैं...नहीं जानती थी कि आप इतने...

दिवाकर तो टेलीफोन दूर नहीं है।

वीणा आपको मालूम है यदि आप हमारे घर में पकड़े जायँ तो हमारी क्या हालत होगी?

दिवाकर मुझे मालूम है। इसलिए मै ट्यूडर के सामने आया था कि मेरे कारण वह आप पर सन्देह न करे। उसने मुझे बंगले के पिछले भाग में घूमते देखा। वह देर तक खड़ा घूरता रहा। मैंने समझा उसे मुझ पर सन्देह हो रहा है। उसी को दूर करने मैं आ गया। वह कल्पना भी नहीं कर सकता कि दिवाकर मनोहर के यहाँ होगा। (कुरसी पर बैठ जाता है।)

वीणा मैं आपके तप, त्याग और देशभक्ति का सम्मान करती हूँ। आप महान् हैं। मेरे जीवन मे यह पहला ही अवसर है कि...

दिवाकर (हँसकर) काश! मैं अपना सम्मान कर पाता। यही नहीं किया मैंने, वीणा देवी।

वीणा (तेज़ी में) क्या आप चाहते हैं कि पुलिस आपको पकड़ ले?

दिवाकर (खड़ा होकर) नहीं, हरगिज नहीं। मरते दम तक मैं अपना काम करना चाहता हूँ। (चुप्पी)

वीणा (ठंडी होकर) क्या आप अपने दल मे किसी और को भी भरती करते हैं?

दिवाकर—(चुप रहकर सोचता हुआ) हम लोगों का दल उन लोगों का दल है जो अपना सिर हथेली पर रखकर आग पर चलते है। क्यों, तुम ऐसा क्यों पूछती हो?

वीणा—कुछ नही, यो ही। मैं अभी आई। (बँगले में चली जाती है।)

दिवाकर—मेरे जीवन का ध्येय अधूरा है। हम लोग स्वतन्त्रता की नीव के लिए एक ईंट की तरह हैं। लेकिन मैं पूरी ईंट भी नही बन पाया। हम लोगो के प्रयत्न आधे से अधिक निष्फल होते हैं। न जाने क्यों? (सोचकर) इसलिए कि हम लोग साधनहीन है। अपने सिर से पहाड को तोड़ना चाहते हैं। उसे चूर-चूर कर देना चाहते हैं। मुझे अभी यहाँ से जाना होगा।

[वीणा लौटकर आती है।]

वीणा—(पोटली देती हुई) यह मेरी तुच्छ भेंट है।

दिवाकर—क्या है इसमें? (टटोलकर) नोट? यह हमारे लिए बड़े काम की चीज है। कई बार सोच चुका हूँ कि रेणु को, माँ को भी चिन्ता से मुक्त कर दूँ। लेकिन जीवन...

वीणा—रेणु आपकी पत्नी का नाम है? लेकिन जीवन...

दिवाकर—सात-आठ साल का एक बच्चा।

वीणा—क्या उन्हें मार देना चाहते हैं?

दिवाकर—दोनों को। लेकिन जीवन...

वीणा—न जाने आप ऐसी बातें सोच भी कैसे सकते हैं?

दिवाकर—लड़के को तुम रख लो, वीणा, मैं उन दोनों को कष्ट से मुक्त कर देना चाहता हूँ।

वीणा—कितने कठोर हैं आप!

दिवाकर—क्रान्तिकारी पत्थर होता है। उसके दिल नहीं होता। कोई भी भावुकता, कला, सौन्दर्य, प्रेम उसके लिए नहीं है। उसके सामने मनुष्य के दो रूप हैं—अपना या शत्रु का। एक ओर माँ की स्वतन्त्रता और

दूसरी ओर उसमे विघ्न डालने वाले व्यक्तियों का समूह। (तेज़ होकर) क्रान्तिकारी अपने उद्देश्य के लिए माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी सभी की हत्या कर सकता है।

वीणा (खड़ी होकर) ओफ्!

दिवाकर शत्रु को समाप्त कर देना ही उसका शास्त्र है।

वीणा आपने मनोहर पर विश्वास कर लिया। क्या वह आपकी कमजोरी नही है?

दिवाकर विश्वास मैंने नहीं किया। किन्तु परिस्थिति ने मुझे विश्वास करने के लिए बाध्य किया है। मै मानता हूँ, राक्षस मे भी कभी-कभी दया होती है। बस, इतना ही।

वीणा यदि वह आपको पकड़वा दे तो? क्योंकि...

दिवाकर आपको कहने की आवश्यकता नही है। मैं जानता हूँ उसके हृदय में संघर्ष हो रहा है। वह अपने को छिपाकर भी नही छिपा पाता। तुम्हारे हृदय मे भी...

वीणा आप ठीक कहते हैं, किन्तु, क्या...

दिवाकर साधना का मार्ग कठिन है, वीणा। हमारी पार्टी परीक्षा लेती है।

[एकदम रिवाल्वर ताने मनोहर आता है।]

मनोहर (पास आकर दिवाकर से) हैण्ड्स अप!

[वीणा और दिवाकर इस अवस्था से परिचित न होने के कारण एकदम कुछ घबरा जाते हैं। वीणा आँखे बन्द करके बैठ जाती है। दिवाकर फुरती से रिवाल्वर निकाल लेता है।]

मनोहर (हँसकर) बस बस, दिवाकर, मै मज़ाक कर रहा था, दिवाकर, तुम सचमुच बड़े वीर हो।

[परदा गिरता है।]

दूसरा दृश्य

[आँगन में तुलसी के थरौंदे के सामने सूर्य की ओर मुँह किये हुए दयामयी अर्घ्य दे रही है, एक-टक निगाह से प्रार्थना करती हुई सूर्य की ओर देख रही है। दयामयी सफेद धोती पहने है जिसमें थेगली लगी है। गौर वर्ण, तेजस्वी मुख पर सात्विक भाव झलक रहे हैं। शरीर में यौवन के ढलान के चिन्ह, कद मंझोला, इकहरा शरीर, दुर्बल, बड़ी-बड़ी आँखें, माथे पर सफेद चन्दन की बिन्दी। अर्घ्य देने के बाद देर तक सूर्य की ओर देखती प्रार्थना करती रहती है। इसी समय सात-आठ साल का लड़का जीवन प्रवेश करता है। खद्दर का कुर्ता और वैसा ही पाजामा, गले में बस्ता लटक रहा है। नंगे पैर आकर वृद्धा दयामयी के सामने खड़ा हो जाता है।]

दयामयी (उत्सुकता और निराशा भरे हुए) आज इतनी जल्दी आ गए, जीवन ?

जीवन—हाँ माँ। मास्टर साहब ने स्कूल से निकाल दिया। कहते हैं तुम्हारे बाप सरकार के खिलाफ हैं। तुम्हे स्कूल में नहीं पढ़ाएँगे।

दयामयी (बेचैनी आश्चर्य पीकर) हूँ !

जीवन हम सरकार के खिलाफ हैं, माँ ? क्या किया बाबूजी ने ? (दयामयी सूर्य की तरफ देखती रहती है) माँ, बाबू कहाँ हैं ? तुम कहती थीं वह गये हैं। कहाँ गये हैं ? क्या लेने गये हैं ?

दयामयी (बच्चे के पास आकर उसके सिर पर हाथ फेरती है और गम्भीर मुद्रा बनाए) बस्ता रख दो, बेटा।

जीवन आज हमारे यहाँ इन्स्पेक्टर साहब आ रहे हैं। पर हमे निकाल दिया। और सब अच्छे हैं, हम ही खराब हैं ! अब नहीं पढ़ूँगा

क्या ? मैं तो पढ़ूँगा, माँ ! मैं बाबूजी जैसा बनूँगा, माँ ! तुम मुझे और किसी स्कूल में भरती करा देना भला ?

दयामयी (आँखों में छलकते हुए आँसुओं को रोकती हुई और भर्राई हुई आवाज़ में) बस्ता रख दो, बेटा ।

जीवन हमारे मास्टर साहब ने मुझे बाहर ले जाकर कहा : "तुम घर जाओ, जीवन !" और वह रोने लगे । रो क्यों रहे थे वह ? (बस्ता रखने चलता है, फिर लौटकर) हेडमास्टर साहब ने हमें निकाल दिया और चोर लड़के बैठे थे, झूठ बोलने वाले, गालियाँ देने वाले भी । सब बैठे रहे और मुझे निकाल दिया । बड़े वैसे हैं हेडमास्टर साहब, हैं न माँ ?

दयामयी (दूसरी तरफ मुँह करके आँसू पोंछती है । जीवन की ओर देखकर) हाँ, बड़े वैसे हैं तुम्हारे हेडमास्टर । तुम जाओ और सवेरे-वाली किताब पढ़ो ।

[जीवन कमरे में जाता है और फौरन ही लौट आता है ।]

जीवन माँ, तुम हेडमास्टर के पास जाओगी ? नहीं, तुम मत जाना । वहाँ औरतें नहीं जातीं । अम्माँ भी नहीं जायँगी । फिर अब मैं कहाँ पढ़ूँगा ? (अपने आप) न जाने अब मैं कहाँ पढ़ूँगा ? (दौड़कर किताब ले आता है और उसकी तस्वीरें देखने लगता है ।)

दयामयी (कुछ देर मौन रहकर) अब यही कसर थी वह भी हो ली, देख रहे हो तुम ? धीरे-धीरे सब द्वार बन्द हो रहे हैं । पुलिस का चौबीस घण्टे पहरा रहता है बाहर । लोग हम से मिलते डरते हैं, बात करते डरते हैं । जब चाहे रात को, दिन में, पुलिसवाले घर में घुस पड़ते हैं और चप्पा-चप्पा जमीन छान मारते हैं ।

[इसी समय एक पुलिसमैन अन्दर आता है ।]

पुलिस वाला माई जी, आज जीवन जल्दी आ गया ।

जीवन हमको हेडमास्टर ने आज स्कूल से निकाल दिया ।

[दयामयी बिना कुछ बोले पुलिस वाले की तरफ देखती है, जैसे उत्तर हो गया हो ।]

पुलिस वाला जमाना बड़ा खराब है, माँ जी। बड़े बाबू आप भी तकलीफ उठा रहे हैं और तुम्हें भी कष्ट दे रहे हैं। सीधे से आ जायँ और सरकारी अफसर बन जायँ तो छूट सकते हैं।

दयामयी (क्रोध से) तुमसे मैंने इतनी बार कहा कि भीतर मत आया करो। जाओ, तुम कौन हो उपदेश देनेवाले?

पुलिस वाला गलती माफ। मैं तो जीवन भैया को देखकर आ गया था। (बड़बड़ाता चला जाता है।)

जीवन इसने बाहर भी पूछा था, माँ!

दयामयी दरवाजा बन्द कर दो, जीवन। (थाली में दाल बीनती है, जीवन तस्वीरें देखता रहता है।)

दयामयी (कड़ककर) जाओ, सुना नहीं?

जीवन (दरवाजा बन्द करके माँ के पास खड़ा होकर) तो क्या अब अम्माँ भी स्कूल से निकाल दी जायँगी?

[दयामयी दाल बीनना बन्द करके बच्चे की तरफ देखती है जैसे उस छोटे से बच्चे ने भविष्य का दर्शन कर लिया हो। एकदम सिहर उठती है, फिर गम्भीर होकर दाल बीनने लगती है।]

जीवन हमने सारे सबक याद कर लिए। तुम देखो न माँ, हमारी कापी कितनी साफ है। (दौड़कर कापी बस्ते में से निकाल लाता है।) फिर भी मास्टर साहब ने हमें निकाल दिया।

दयामयी अम्माँ आज तुम्हारी परीक्षा लेंगी। मैं उससे कह दूँगी।

जीवन (निहोरे के स्वर में) हम बाहर खेल आएँ?

दयामयी अच्छे लड़के गलियों में नहीं खेलते, बेटा। अपनी किताब पढ़ते हैं। वही किताब पढ़ो।

जीवन—(पुस्तक पढ़ता है) लोकमान्य तिलक का जीवन विद्रोही का जीवन था। (रुककर) विद्रोही क्या?

दयामयी इसका मतलब है तिलक सदा सरकार के विरोधी रहे। उन्होंने हमेशा सरकार से लड़ाई की। तुमने तिलक की कहानी पहले भी

पड़ी है।

जीवन वैसे हमारे बाबूजी लड़ते है ?

दयामयी हाँ।

जीवन कैसे लड़ते हैं, तीर कमान लेकर, तलवार लेकर ? बाबूजी के पास तो मैंने एक भी तलवार नहीं देखी। उस दिन रात को आए थे न। मैं भी एक तीर कमान बनाऊँगा।

दयामयी (ढ़ाल बीनना बन्द करके) हाँ।

जीवन क्यों लड़ते हैं सरकार से बबूजी ?

दयामयी अंग्रेजों को यहाँ से निकालने के लिए।

जीवन (कुछ देर सोचकर) अंग्रेज, ये टोप वाले, ये तो मुझे भी बुरे लगते हैं। मैं भी इनको निकालूँगा।

दयामयी यह देश हमारा है। तुम्हारे बाबूजी इन्हें देश से निकालने गये हैं।

जीवन कान पकड़कर या तलवार से ?

दयामयी (हँसकर) हाँ, घसीटकर बाहर कर देंगे।

[दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है। जीवन दरवाजा खोलता है। उदास रेणु का प्रवेश। २७ साल की रमणी, सुन्दर शरीर पर चिन्ता से आकुल, साधारण धोती पहने, गले में झोला, शुभ्र वर्ण, मादक आँखें, कुछ लम्बा गोल मुख, कद साधारण, भीतर-ही-भीतर घुलने के कारण गम्भीर मुखाकृति, चेहरे पर परिश्रम के चिह्न। दयामयी प्रश्नसूचक दृष्टि से रेणु की ओर देखती है।]

जीवन (आगे आकर) अम्माँ, हमको स्कूल से निकाल दिया। मास्टर साहब ने कहा : "तुम घर जाओ। तुम्हारे बाबू जी सरकार के···" क्या हैं माँ ? हाँ, खिलाफ हैं। अब हम भी सरकार के खिलाफ बनेंगे, अम्माँ। हमको निकाल दिया, हम उनको निकाल देंगे।

रेणु आज मेरा भी काम छूट गया।

दयामयी (घबराहट में थाली रखकर देखती हुई) काम छूट गया?

क्या तुझे भी निकाल दिया ?

रेणु हम जैसे ही स्कूल पहुँचे, प्रिन्सिपल ने बुलाकर कहा : "हमें खेद है कि हम आपको नहीं रख सकेंगे।"

[दयामयी गुमसुम बैठी रहती है।]

जीवन हमने कहा था न, अम्माँ को भी वे निकाल देंगे। अब हम कहाँ पढ़ेंगे अम्माँ ?

[रेणु जीवन के सिर पर हाथ फेरती हुई दयामयी की तरफ देखती रहती है।]

रेणु स्कूल कमेटी के सभापति रायसाहब हैं। भला वहाँ हम काम कैसे कर सकते थे ! पहले जो डर था वही हुआ।

[लम्बी साँस लेकर रेणु कमरे में चली जाती है। दयामयी गुम-सुम धीरे-धीरे दाल बीनने लगती है। वातावरण में घुटन पैदा हो जाती है। जीवन भी चुप होकर किताब की तस्वीरें देखने लगता है। मालूम होता है दयामयी की लम्बी साँसें सारे आँगन में फैल गई हैं। कुछ देर चुप्पी रहती है। रेणु कपड़े बदलकर आती है।]

रेणु लाओ मैं दाल बीन दूँ, तुम अपना गीता-पाठ कर लो। २५ रुपये बने तनख्वाह के सो भी दे दिए। (रुपये दयामयी के सामने रख देती है। दयामयी दाल बीनती रहती है। रुपये वैसे ही पड़े रहते हैं।) लाओ न, हम दाल बीन लें। (हाथ से दाल की थाली ले लेती है।)

दयामयी (मुट्ठी में रुपये लेती हुई) दो महीने से मकान का किराया नहीं दिया। बीस तो वही ले जायगा। सबेरे भी आया था। बहुत बक-झक कर रहा था।

रेणु पुलिस वाले उस पर दबाव डाल रहे हैं कि हम से मकान खाली करा ले।

दयामयी पुलिस वाले हमें फाँसी क्यों नहीं दे देते ! एक बार ही सब काम निबट जाय।

रेणु जैसे हमको कहीं रहने नहीं देंगे। जीने नहीं देंगे। मार ही

डालेंगे दुष्ट कहीं के।

जीवन (चिल्लाकर) अम्माँ, तो क्या तिलकजी ने स्कूल में मूँगफली नहीं खाई थी? फिर उनके मास्टर ने उन्हें क्यों मारा? बैंच पर क्यों खड़ा कर दिया? क्या उस वक्त भी उनके मूँछें थीं जब वह पढ़ते थे?

दयामयी मूँछें तो बड़े होने पर आती हैं बेटा! लड़कों ने उनका झूठा नाम लगा दिया था।

जीवन तुम ठीक कहती हो। हमारे स्कूल में लड़के मूँगफली खाते है। हम तो नहीं खाते। हमारे पास इतने पैसे भी तो नहीं हैं न!

दयामयी स्कूल पढ़ने की जगह है, खाने की जगह नहीं है। स्कूल में, बाजार में, कभी नहीं खाना चाहिए। खाने की जगह तो घर है।

[जीवन पुस्तक में ध्यान लगाकर पढ़ने लगता है, कोई उत्तर नहीं देता।]

रेणु तो किराया दे दो।

[दयामयी कुशा का आसन बिछाकर गीता का पाठ करती है। रेणु दाल बीनती है। दरवाजे पर खट-खट की आवाज।]

जीवन—कौन? (दौड़कर किवाड़ खोलता है।)

मकान मालिक (अन्दर आकर) माँ जी, दो महीने हो गए। हमारे घर भी खजाना नहीं गड़ा है। कहाँ तक माँगें? मैं कहता हूँ कि नहीं दे सकतीं तो मकान खाली कर दो। मैं कुछ नहीं लूँगा।

रेणु बहुत क्यों बोलते हो? लो अपना किराया। रसीद लाये हो? (दयामयी की तरफ देखती है।)

मकान मालिक किराया देंगी तो रसीद भी लेंगी। कान खोलकर सुन लो। इस महीने से १५ रु० देना होगा नहीं तो मकान खाली करना पड़ेगा। फिर मैं कुछ न सुनूँगा।

दयामयी तुम तो बिना बात के बिगड़ रहे हो। अपना किराया लो और रसीद दे दो। रही किराया बढ़ाने की बात सो ऐसे किराया नहीं बढ़ सकता। न कोई मकान ही खाली करा सकता है।

मकान मालिक (गरजकर) क्यों नहीं करा सकेता? मैं करा सकता हूँ। चाहूँ तो कल सारा सामान उठवाकर फिकवा दूँ। मैं कहता हूँ, औरतें हैं, न बोलूँ इनसे। सिर पर ही चढ़ी चली जाती हैं। कल ही दारोगाजी कह रहे थे।

दयामयी (उठकर पास आती हुई) दारोगाजी के भरोसे न रहना, लाला। कल को तुम्हारा और तुम्हारे घरवालों का कहीं पता भी न लगेगा। जो आदमी इतनी बड़ी सरकार से लड रहा है···

रेणु (पास जाकर) जाने दो, ऐसों के मुँह लगना ठीक नहीं है। हाँ, लाओ रसीद। लो अपना किराया।

मकान मालिक (उसी तेजी में) यह मत समझना माँ जी, सारा थाना मेरे साथ है। उन्होंने कहा है कि इन लोगों को निकाल दो।

दयामयी तो फिर निकाल दो। देखते क्या हो? असबाब उठाकर फेक दो। मैं कहती हूँ कि पुलिसवाले पीछे मदद करेंगे पहले काम तमाम हो जायगा। जरा हिम्मत करके देखो न?

रेणु खोजने पर निशान भी नहीं मिलेगा। सुना नहीं है क्या? खैर कान खोलकर सुन लो। अपना किराया चुपचाप महीने-के-महीने लेते जाओ। इसी मे भला है। रसीद ले आओ पहले।

मकान मालिक (सोचता हुआ नरम पडकर) आप तो वैसे ही नाराज हो रही हैं, माँ जी। मैं क्या नहीं जानता दिवाकर बाबू को। बड़े-बड़े पुलिस के अफसरों को उन्होंने नाकों चने चबवा दिए। मै भी क्या करूँ? बात यह है···बात यह है ये पुलिस वाले मुझे रोज तंग करते हैं।

दयामयी मैं जानती हूँ।

मकान मालिक अच्छा, अभी रसीद लाया।

[चला जाता है। रेणु दरवाजा बन्द कर देती है।]

रेणु जीने के सारे रास्ते धीरे-धीरे बन्द हो रहे हैं। लड़के को स्कूल से निकाल दिया। हमारी नौकरी छूट गई। अब क्या होगा माँ? कैसे करेंगे?

दयामयी घबरा मत बेटी, हमारी दृढ़ता की परीक्षा हो रही है। जब आग जलती है तब सारे बदन को सेंक लगता है। एक तरफ सारा राज, तोप, मशीनगन, गोले, पुलिस, फौज और दूसरी ओर स्वतन्त्रता की आँच मे तपे हुए ये थोड़े से मास के लोथड़े, जो अकेले बेपतवार, बिना नाव के कष्टों के समुद्र मे कूद पड़े हैं। मैं उन्हीं की माँ हूँ, रेणु।

रेणु हमे कोई कष्ट नहीं है माँ!

जीवन ये पुलिस वाले बहुत खराब हैं माँ! तिलकजी को भी जेल भेज दिया। बस, अब मैं नहीं पढ़ूँगा। (उठकर कूदने लगता है।)

दयामयी रहने दो, फिर पढ़ लेना।

रेणु आज तो तेल भी खतम हो गया।

दयामयी कभी-कभी सोचती हूँ इन थोड़े से पत्थरों से क्या नदी का पुल बन सकेगा? पर इन लोगों ने भी तो कुछ-न-कुछ जरूर सोचा होगा।

रेणु सुना है बड़े जोर से धर-पकड़ हो रही है। उनके लिए तो इनाम भी है।

दयामयी कोई कहता था दस हजार का इनाम है। मेरी छाती गर्व से फूल उठती है, जब मैं अपने बच्चे का खयाल करती हूँ। ग्रहण भी तो सूर्य और चाँद जैसों को लगता है।

रेणु (हृदय में एक हूक-सी उठती है) न जाने कहाँ होंगे वह? बहुत दिन हो गए देखे।

दयामयी जहाँ ऐसे लोगों को होना चाहिए बेटी, और कहाँ होंगे? तू तो मेरी अशोक वन की सीता है। (टप-टप करके आँसू गिरते हैं।)

रेणु यह क्या कर रही हैं, माँ?

दयामयी (आँसू पोंछकर) कुछ नहीं, बेटे को वात्सल्य प्रेम का अर्घ्य देने के लिए हृदय उमड पड़ा। मैं कच्ची नहीं हूँ, रेणु। जहर पीकर आया है मेरा यह मन, जो मरना नहीं जानता, रोना नही जानता, मेरी बेटी। और तेरा विवाह तो जैसे परीक्षा-पर-परीक्षा देने को हुआ है।

रेणु—हाँ, माँ, मुझ-सा बडभागी कौन है जिसके स्वामी कष्टों की आग

मे तपकर कुन्दन हो रहे हैं। मुझे कोई कष्ट नहीं है। तुम्हारी चरण-रज सदा मुझे मिलती रहे तो मेरे हृदय के आँसू जीवन मे बदल जायँगे।

दयामयी तो मैं तेल ले आऊँ?

जीवन मैं भी चलूँगा, माँ?

रेणु इसे भी साथ लेती जाओ। अब तो बच्चे इसके साथ खेलते भी डरते हैं। मैं जब बाहर निकलती हूँ तो जान-पहचान की स्त्रियाँ ऐसे कतराती हैं जैसे मेरी छाया भी उन्हें डस लेगी। दूर-दूर से लोग देखते हैं। (हँसकर) कुछ तो दूर ही खड़े होकर प्रणाम भी करते हैं।

दयामयी तू भी तो साक्षात् दुर्गा है, बेटी। ला, तेल की बोतल दे दे। चलो, बेटा जीवन।

रेणु (जाती हुई रुककर) अभी कल ही की तो बात है, गली के मोड पर कोई नया परिवार आकर बसा है। मैं स्कूल जा रही थी तो एक पढ़ी-लिखी स्त्री अपने बच्चे को लाई और मेरे पैरों की धूल उठाकर उसने अपने बच्चे के माथे पर लगा ली। मैंने रुककर पूछा : "यह क्या करती हो, बहन?" तो बोली कुछ भी नहीं। प्रणाम करके चली गई।

दयामयी भगवान् भी उसी की परीक्षा लेते हैं, उसी को प्यार करते हैं जो कर्तव्य की आग मे जल सकता है। (बोतल लेकर चलती है) दरवाजा बन्द कर ले।

रेणु (दरवाजा बन्द करके तुलसी के घरौंदे के पास अपनी चोली में से चित्र निकालकर देखती हुई प्रणाम करती है, फिर चूमती है) प्राणनाथ, क्या हम लोग एक-दूसरे से अलग होने के लिए ही मिले थे? तुम देशप्रेम की आग मे जल रहे हो, मैं प्रतीक्षा की अनबुझ आग में। क्या इसका कभी अन्त होगा? मेरे प्राण तुम्हारी याद मे उबल-उबलकर छटपटाते रहते हैं और तुम इतने निठुर कि स्वप्न मे भी आकर चले जाते हो। मैं जानती हूँ तुम मुझे प्रेम करते हो। मेरे सुख के लिए खोज-खबर लेते रहते हो। पर मैं तो तुम्हे चाहती हूँ। (रुककर) आज हम लोग निराधार हैं। कोई सहारा नहीं है। कहीं कोई किनारा नही दीखता। घृणा, कष्ट, अभाव,

दरिद्रता के विषधर नाग हमें लील जाने को मुँह बाये खड़े हैं। तुम्हारी माँ बाहर से हँसती हुई भी भीतर-ही-भीतर रोती हैं। मैं उन्हें धीरज नहीं बँधा सकती, (आँखों में आँसू भर आते हैं) क्योंकि मैं स्वयं कमजोर हूँ, निर्बल हूँ। (रोती है और टप-टप कर आँसू गिरने लगते हैं। थोड़ी देर चुप रहने के बाद) तुम्हारा लाड़ला जीवन आज स्कूल से निकाल दिया गया। वह शैशवोचित अज्ञान में अपनी इच्छा को दबाए अब भी हँसता है और उसे देखकर मेरा हृदय भीतर-ही-भीतर फूट-फूटकर रोता है। माँ के अथाह, अतल हृदय-सागर में उसे देखकर तूफान आ गया है। पर वह माँ नहीं, साक्षात् शक्ति हैं। सचमुच मैं ऐसी सास पाकर धन्य हो गई और धन्य हो तुम, जिसको ऐसी माँ मिली। (रुककर) प्रियतम, क्या अब कोई उपाय नहीं है ? आओ, और एक बार आकर मुझे अपने आलिंगन-पाश में बाँध लो। (चित्र को छाती से लगाकर ध्यानस्थ हो जाती है। आँखों से अविरल अश्रुधारा बहती रहती है। तुलसी के बरुवे को दोनों हाथों में भरकर) मेरी रक्षा करो, माँ। यह असह्य विरह-वेदना अब नहीं सही जाती। रक्षा करो, तुम तो विष्णु की पत्नी हो (टहलने लगती हैं) क्या करूँ ? किस तरह उनको पाऊँ ? (चित्र को सामने देखकर) मै रोम-रोम से चाहती हूँ कि तुम अपने व्रत मे पूर्ण हो। (मुस्कराकर) तुम देख रहे हो मेरी ओर। मै यही तो चाहती हूँ। तुम मुझे देखते रहो और मैं तुम्हे। (चित्र को छाती से लगा लेती है।)

[इसी समय छत से धीरे-धीरे एक आदमी सीढ़ियाँ उतरता है।]

रेणु (पदचाप सुनकर) कौन ? तुम मुरली ?

[वह आदमी पास आ जाता है और रेणु के पैर छूकर उसकी धूल मस्तक मे लगाता है।]

रेणु (हँसकर) खूब वेश बनाया, भाई !

मुरली बड़ी कठिनाई से आ पाया, भाभी। दरवाजे से तो आ सकना असम्भव था। चौबीस घण्टे एक-न-एक बैठा ही रहता है न।

रेणु हाँ, भैया। इनके मारे पास-पड़ोस के आदमी-औरतों ने आना

छोड दिया है। जीवन के साथ खेलते बच्चों को भी उनके माँ-बाप बरज देते हैं। कहो।

मुरली दादा का पता लग गया है।

रेणु (आश्चर्य से) पता लग गया है?

मुरली हम लोगों ने आवश्यक सामग्री जुटाने के लिए पिछले दिनों रेलगाड़ी से जाते हुए खजाने को लूटा था याद है न?

रेणु हाँ, दो महीने तो हुए उसे। फिर?

मुरली उसके बाद तीन अंग्रेज अफसर स्यालदा स्टेशन पर मारे गए।

रेणु पढ़ चुकी हूँ। क्या वह भी तुम लोगो का···

मुरली हाँ, उसके बाद उस दिन हम पुल उडाने की सोच रहे थे प्रोग्राम बन चुका था। दादा के नेतृत्व में वह काम होने जा रहा था कि अचानक उन्हे तेज बुखार हो आया। फिर भी वह काम करते रहे। इसी समय हमने सुना कि वायसराय दौरे पर जा रहे हैं। उन्होने हमें दिल्ली भेज दिया और आप बुखार मे पड़े रहे।

रेणु बुखार आ गया उन्हें और कोई पास भी नहीं था?

मुरली उन्होंने आवश्यकता नहीं समझी। फिर भी एक आदमी हम लोग उनकी देखरेख के लिए छोड़कर चले गए। वह आदमी जब-तब आता और उनकी व्यवस्था कर जाता। वह मन्दिर में बुखार मे पड़े रहे। इधर वायसराय का दौरा अचानक कैन्सल हो गया। फिर भी हम लोग वही लगे रहे। पीछे जाकर देखा दादा का कहीं पता नहीं है। हम लोगो को शक हुआ कहीं पकड़े गए क्या। पर यह जानकर कि दादा को पकडने के लिए इनाम की घोषणा बराबर हो रही है, हमे सन्तोष हुआ।

रेणु (घबराकर) फिर कहाँ है वह? उनकी हालत कैसी है, मुरली भैया? हाय, वह बीमार और मैं उनकी सेवा भी नहीं कर सकी।

मुरली फिर भी उनका पता नहीं लग रहा था। हमने आसपास सभी कुछ छान मारा। मन्दिर के आदमी से मालूम हुआ इधर उनका बुखार बढ़

गया था। वह बुखार मे ही बेहोश रहने लगे और उसी अवस्था मे वह पुलिस के डर से वहाँ से उठकर चले गए। दूसरे दिन पुलिस आई।

रेणु (घबराकर) तो क्या वह पकड़े गए?

मुरली उसी हालत में एक आदमी उन्हें ले गया और उनका इलाज किया।

रेणु क्या उसने उन्हें पहचान लिया?

मुरली हाँ, वह उनका क्लासफेलो, पुलिस का एक अफसर है।

रेणु (चिल्लाकर) क्या? अब खैर नही है, मुरली।

मुरली वह अभी तक उसी के यहाँ हैं।

रेणु पर यह तो बहुत बुरी बात है। हो सकता है वह उन्हे छोड दे और उनके साथियों को पकडने में उनकी सहायता चाहे। मै पुलिसवालों पर किसी तरह का विश्वास नहीं करती, भैया! न जाने क्यों उन्होने ऐसी गलती की। क्या तुम विश्वास करते हो कि वह कोई भेद की बात कह देंगे?

मुरली हम लोगो को इसकी चिन्ता नहीं है। वह ऐसा कभी नहीं करेंगे। फिर भी वह बड़ी खतरनाक जगह घिर गए हैं। उन्हें लौट आना चाहिए।

रेणु वह कौन आदमी है? क्योंकि कालिज में मैं उनसे एक क्लास पीछे थी, शायद जान सकूँ।

मुरली मनोहरसिंह। गुप्तचर विभाग का इन्स्पेक्टर।

रेणु (काँपकर) वह तो बहुत भयंकर आदमी है, मुरली।

मुरली उसी ने हमारे दल के दो आदमियो को पहले भी पकड़ा है। हम लोग बड़े चिन्तित हैं कि उन्हे कैसे वहाँ से निकाला जाय। हो सकता है वह उन्हें नशा पिलाकर सभी कुछ उगलवा ले।

रेणु मै विश्वास नहीं करती। (कुछ देर चुप रहकर) फिर भी तुम ठीक कहते हो। वह बडा जालिम है। उसने बडे-बड़े केस पकड़े हैं। वह इनके साथ भी दगा किये बिना नहीं रह सकता।

मुरली- हम लोगों की जान संशय मे पड़ी हुई है। दादा का मामला

न होता तो हमे कोई चिन्ता नहीं थी। वह हमारे नेता है।

रेणु तो क्या तुम समझते हो उसने दया करके उनको रखा है?

मुरली यह तो मनोविज्ञान की बात है कि कभी-कभी बुरे मनुष्य के हृदय में भी सात्विक भाव उत्पन्न होते हैं। किन्तु बिल्ली चूहे पर कब तक दया कर सकती है?

रेणु मेरी कुछ समझ मे नहीं आता। मैं तुम लोगों के समान बुद्धिमान भी नहीं हूँ। न जाने क्या हो?

मुरली मैं जानता हूँ। हमारे बहुत से लोग इस समय बाहर हैं। डर तो नहीं है, फिर भी दादा का खयाल तो है ही।

रेणु मैं जानती हूँ वह दगा नहीं करेंगे। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन... (क्रोध में भरकर) उस दिन वह जिन्दा नहीं रहेंगे। हम लोग उन्हीं के लिए कष्ट सह रहे हैं।

मुरली उत्तेजित न हो, भाभी। ऐसा दिन कभी नहीं आएगा। उस दिन सत्य झूठा हो जायगा। पहाड पानी बनकर बहने लगेगा।

रेणु फिर तुम मुझसे क्या चाहते हो?

मुरली सूचना देने आया था और चाहता हूँ...(कान में कुछ कहता है)

रेणु तो क्या तुम मुझे भी इस आग मे डालना चाहते हो? कोई बात नहीं। मैं जाऊँगी।

मुरली मुझे आज्ञा दो। माँ कहाँ हैं? उसकी चरण-रज लेना चाहता था।

[रेणु सोचती रहती है जैसे खो गई हो। मुरली चारों तरफ देखता है दरवाजे के पास जाकर झाँकता है। दौडकर कोई आ रहा है।]

रेणु भीतर छिप जाओ। खाना खाकर जाना। अब तो याद नहीं आती कला की?

मुरली आज मेरा प्रेम व्यापक बन गया है, भाभी। अब मैं देश के विरह में जलने लगा हूँ। मेरी आँखें खुल गई हैं। मेरा विचार बदल गया

है। कला का प्रेम मेरे लिए एक लग्जरी है, अय्याशी है। ऐसा प्रेम हर निकम्मे आदमी को घेर लेता है। आज प्रत्येक युवती मेरे सामने तड़पती हुई मातृभूमि का प्रतीक है।

रेणु काश, तुम्हारे विचार सच हों। इस दल में काम करने वाले किसी आदमी को शादी नहीं करनी चाहिए। भौतिक प्रेम उनके लिए विष है।

मुरली वह विष पीकर मैं नीलकंठ बन गया हूँ। अच्छा, मुझे आज्ञा दो।

रेणु ठहरो, मैं देखती हूँ। माँ आ रही होंगी। चिन्ता की कोई बात नहीं है।

[द्वार पर खट-खट। रेणु कुंडी खोलती है। दयामयी और जीवन आते हैं।]

दयामयी (बहू से) ले, तेल की बोतल और यह साग। यह किराए की रसीद भी रख ले। बीस रुपये दे आई हूँ। दो रुपये दुकानदार के पिछले थे। बारह आने का सामान है।

जीवन अम्माँ, देखो, हम गुब्बारा लाए हैं। इसमें डोरा बाँध दो।

दयामयी जीवन बर्फी के लिए जिद कर रहा था सो दो आने का गुड़ भी ले आई हूँ।

जीवन सब लड़के मिठाइयाँ खाते हैं, माँ।

रेणु गुड़ भी मिठाई है, बेटा। हम लोग गरीब आदमी हैं न। लो। (ज़रा सा गुड़ देती है।)

जीवन (गुड़ लेता हुआ) हाँ। (खाने लगता है।)

दयामयी (भीतर देखकर) यह कौन है?

[मुरली बढ़कर दयामयी के पैर छूता है।]

रेणु (मुस्कराकर) मुरली है। दरवाजे पर आहट पाकर छिप गया था।

दयामयी (हँसती हुई) इसीलिए तुम लम्बे बाल रखते हो। मैं

तो भुलावे मे आ गई, जैसे कोई औरत बैठी हो।

जीवन यह कौन हैं, अम्माँ ?

रेणु तू नहीं जानता ? पहचान।

जीवन मुरली काका हैं।

दयामयी क्या हाल है तुम्हारे दादा का ?

[मुरली कान मे बात करता है।]

दयामयी—(कुछ देर चुप रहकर) उसी से पूछ लो। यदि वह जाय तो···

मुरली मैं इसीलिए आया हूँ।

दयामयी ठीक है।

मुरली- मुझे आज्ञा दीजिए। कई काम हैं।

रेणु और खाना ?

मुरली क्रान्तिकारी खाता नहीं है। पेट मे डाल लेता है। जो भी मिल जाय, जहाँ भी मिल जाय। (दोनों के पैर छूता है।)

दयामयी तुम्हारा काम सिद्ध हो। जाओ बेटा !

[मुरली चुपचाप ऊपर की सीढ़ियों से निकल जाता है।]

दयामयी कितनी देर हुई इसे आये हुए ?

रेणु अभी आए थे, स्त्री के वेश मे। मै तो हैरान रह गई यह कौन औरत है।

दयामयी क्या करें बेचारे ! न जाने इन लोगों को कब सफलता मिलेगी। भूखे-प्यासे चिन्ता में मरे अपने काम के लिए मारे-मारे फिरते हैं। तो तूने पूछा नहीं, अब तो बुखार नहीं है ?

रेणु क्या जाने, बड़ी मुसीबत मे फँस गए हैं। मेरा जी तो रह-रह कर काँप उठता है।

दयामयी अब तो उस भगवान् का ही सहारा है। जो भाग्य मे बदा होगा···मैंने तो अपने पुत्र की बलि चढ़ा दी है उस माँ को। प्रसन्न होगी तो लौट आएगा। पर अभी तो सब ज्यों-का-त्यों है। धीरज भी तो नहीं

बँधता।

[जीवन के सिर पर हाथ फेरती है; आँखों से टप-टप करके आँसू बहने लगते हैं। रेणु देखती है तो उसका हृदय भी भर आता है।]

रेणु धीरज धरो, माँ। तुम्हीं तो हमारा सहारा हो।

दयामयी कैसे धीरज धरूँ बेटी, कहाँ तक धीरज धरूँ? इसका तो कोई अन्त भी दिखाई नहीं देता। इतनी बड़ी मेरी लाड़ली बेटी...

रेणु तुम्हीं हिम्मत हारोगी तो हम किसके सहारे जिएँगे माँ?

दयामयी (आँसू पोंछती हुई) हिम्मत के पर्त जोड़ती हूँ पर टूट-टूटकर गिर जाते हैं बेटी!

रेणु अब तो जो कुछ है हिम्मत बाँधकर सहना होगा। पत्थर का दिल कर लो और खून के आँसू रोओ तो भी...

जीवन अम्माँ, तुम रोती क्यों हो? मैं तो हूँ।

दयामयी (जीवन को गोद में लेकर) हाँ बेटा, तू ही एक हमारा सहारा है।

[जोर से दरवाजा खटखटाने की आवाज होती है। दोनों चौकन्नी होकर देखती हैं कि बहुत से पुलिस के आदमी भीतर घुस आए हैं। थानेदार चारों तरफ देखता है।]

थानेदार (दयामयी से) कौन था यहाँ? कौन आया था? कहाँ गया? (पुलिस से) चप्पा-चप्पा जमीन छान डालो। अच्छी तरह देखो। छत पर चढ़कर आसपास के सब मकानों की तलाशी ले लो। (थोड़ी देर की दौड़धूप के बाद) देखा? मिला कोई? कोई निशान, कोई कपड़ा, जूता?

सिपाही (इधर-उधर देखकर लौटने पर) कुछ भी नहीं। कहीं भी कुछ नहीं मिला, हुजूर।

थानेदार खबर गलत नहीं हो सकती। अच्छी तरह देखो।

[फिर बड़ी सरगर्मी से सारे मकान की छानबीन होती है।]

थानेदार बुढ़िया माई, जल्दी बता वह आदमी कहाँ गया?

दयामयी कौन आदमी ? किसको पूछ रहे हो ? यहाँ तो कोई भी नहीं। बिना मतलब मकान मे आ घुसे, तुम्हें अकेली औरतों में आते शर्म नहीं आती ?

थानेदार बक-बक मत करो, बताओ वह कहाँ गया ?

दयामयी कहीं कुछ हो भी, बताऊँ क्या ? यहाँ कोई आदमी नहीं था भैया !

मुखबिर था कैसे नहीं ? मैंने छत पर एक आदमी इधर आते देखा मैं खबर देने गया और वह हवा हो गया।

थानेदार मैं तुम दोनो को ले जाकर हवालात मे बन्द कर दूँगा, समझीं !

दयामयी तुम हमे फाँसी दे दो। पर कोई हो भी तो ?

थानेदार (रेणु की तरफ) तू बता कहाँ गया ? वह आदमी कौन था ? नहीं तो...

रेणु मैं नहीं जानती। (रसोई में चली जाती है।)

थानेदार (इधर-उधर ढूँढकर) कहीं भी नहीं है। (मुखबिर से) तुम्हे ठीक मालूम है ? कहीं गलती तो नहीं हुई ?

मुखबिर हुजूर, इन आँखों ने कभी धोखा नहीं खाया। जरूर एक आदमी था। सारा बदन कपड़े से ढँका हुआ। मैंने उसे छत पर आते देखा और वह धीरे-धीरे उतरा। बुढ़िया माई, बता दो। सरकार तुमसे कुछ भी नहीं कहेंगे। बता दो कौन था वह, कहाँ गया ?

थानेदार लातों के देवता बातो से नहीं मानते (हण्टर हाथ में लेकर दयामयी से) मार-मारकर खाल उधेड़ दूँगा। बोल सीधी तरह से। बोल सीधी तरह से। (हण्टर तानता है) बोल, बोलती है कि नहीं ?

[दयामयी चुप खड़ी रहती है। रेणु बाहर आकर खड़ी हो जाती है।]

थानेदार (रेणु से) हरामजादी, कहाँ गया वह तेरा...बता, कौन था ?

[जीवन माँ से लिपटकर रोने लगता है। थानेदार कभी दयामयी और कभी रेणु को गाली देता है, पर वे दोनों चुप हैं।]

दयामयी (तैश में आकर) वाह, बड़े बहादुर हो! अरे नौकरी की है तो क्या मनुष्यता भी ताक में रख दी है? औरतों पर हाथ उठाते शर्म नहीं आती तुम्हें? क्या तुम्हारे कोई माँ-बहन नहीं है? (रोती हुई) बिना बात के यहाँ घर में घुस आये और जल्लादों की तरह लगे मारने। मार डालो बेटा!

थानेदार शर्म आनी चाहिए तुम्हें जो सरकार के खिलाफ साजिश करके उसे उलट देना चाहती हो।

दयामयी हम गरीब औरतें क्या सरकार को उलट देंगी? तुम पुलिस वालों का अत्याचार, निरपराध, बेकस औरतों पर जुल्म ही बहुत है सरकार को उलट देने के लिए।

थानेदार (नरम पड़कर) मैं कहता हूँ यहाँ कौन आया था, बता दो। मैं तुम्हें इनाम दिलवाऊँगा।

रेणु (चिल्लाकर) जो इनाम मिल रहा है क्या वही बहुत नहीं है, हत्यारो!

दयामयी सरकार को बनाये रखने का ठेका तो तूने ही लिया है बेटा। पराई स्त्रियों पर हाथ उठाकर उनकी बेइज्जती करके कुछ टुकड़ों के लिए अपने धर्म को बेचने वाले सरकार को कब तक बनाये रख सकेंगे, यह भी कभी सोचा है तुमने?

थानेदार लेकिन सरकार दो-चार सिरफिरे लोगों के उजाड़े नहीं उजड़ सकती। भला, बड़ी-बड़ी तोप बन्दूकों के गोलों के सामने तुम बदमाशों की क्या बिसात है?

दयामयी वे सिरफिरे लोग तुमसे ज्यादा देशभक्त हैं। वे अपनी मौत को हथेली पर रखकर घूमते हैं। चाहे छोटे ही सही, चाहे थोड़े ही सही, लेकिन उनकी देशभक्ति···हिम्मत हो तो अपने उन भाइयों का मुकाबला करो। वहीं जाओ जो तुम्हारे लिए जान हथेली पर रखकर बेईमान डाकुओं को देश से निकाल देना चाहते हैं। हम औरतें क्या जानें?

थानेदार मैं कहता हूँ उपदेश मत दे। सीधे तौर पर बता वह आदमी

कौन था, कहाँ गया ? नही तो मारकर बोटी-बोटी उधेड दूँगा, बुढ़िया।

रेणु कौन आदमी ? कैसा आदमी, हम नहीं जानते। यहाँ कोई नहीं आया।

मुखबिर सरकार, ये यो नहीं मानेंगी।

रेणु सब मिलकर हम दोनों को गोली से उडा दो, घर में आग लगा दो। (रोती है।)

दयामयी (व्यंग्य से) हाँ, यही करो बेटा, तुम्हारे माँ-बहिन थोड़े ही हैं। अरे सत्यानासियो, उस भगवान् से डरो। (रोती हुई चिल्लाकर) तुम्हे आज मेरी बेकसूर बेटी को हण्टर मारते शर्म नहीं आई ? (चिल्लाकर दोनों रोती हैं।)

थानेदार तुम नहीं जानती मैं जल्लाद हूँ, जल्लाद। मेरे मारे सारा जिला कॉपता है।

मुखबिर (जीवन को एक तरफ कोने में ले जाकर) अच्छा, तुम बताओ बेटे, कौन आया था ? मिठाई देंगे मिठाई। लो यह चार आने।

जीवन (पैसे उसी के मुँह पर मारता हुआ) मुझे नहीं चाहिएँ।

थानेदार नहीं बताओगे तो हम तुम्हारी दादी और माँ को पकड़-कर ले जायँगे।

जीवन- मैंने किसी को नहीं देखा।

थानेदार देखो, बता दो। मिठाई दूँगा। बताओ कौन आया था ?

जीवन मैं नही जानता।

थानेदार अच्छा ठहर। (जीवन के कान खींचता है। जीवन कुछ नहीं बोलता। थानेदार एक थप्पड़ लगाकर फिर पूछता है। जीवन चुप रहता है। स्त्रियाँ चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगती हैं।)

दयामयी मार डाला रे, मेरे छोटे बच्चे को मार डाला। मेरी बहू को मार रहे हैं ये हत्यारे।

थानेदार ये बदमाश इस तरह नहीं मानेगी। ले चलो पकड़कर, ले चलो।

दयामयी बदमाश तो तुम लोग हो जो अबलाओं पर अत्याचार कर रहे हो। हम नहीं जायँगे। क्यों जायँ, हमने क्या अपराध किया है? कोई वारंट है? वारंट दिखाओ।

रेणु हम नहीं जायँगे।

जीवन हम भी नहीं जायँगे।

[शोरगुल सुनकर लोग इकट्ठे हो जाते हैं। थोड़ी देर तक चुप रहते हैं।]

एक आदमी (आगे बढ़कर) क्या बात है, साहब?

दूसरा आदमी क्यों मार रहे हैं थानेदार साहब? ये गरीब औरतें अपनी मुसीबतों में-आप मर रही हैं बेचारी।

पहला आदमी आपने इन्हें मारा? औरतों पर हाथ उठाना...

दूसरा आदमी कहीं भी कानून में नहीं लिखा।

थानेदार बको मत, इनको थाने चलना होगा।

तीसरा आदमी वारंट है? आखिर किस बात पर आप इनको थाने लिये जा रहे है? हम लोग सरकार के काम में कोई दखल नहीं देना चाहते। यदि इनका कसूर हो, वारंट हो तो आप इन्हे ले जा सकते हैं। औरतों का मामला है, साहब। हम इसलिए कहते है।

[सब लोग चिल्लाते हैं: "हाँ, हाँ, ठीक है!"]

थानेदार तुम लोग निकल जाओ। सरकारी काम मे दखल मत दो। (सिपाहियों से) घसीटकर ले चलो इन्हें।

[सिपाही तीनों को पकड़कर ले जाते हैं। रंगमंच पर शोर मचता है। नेपथ्य में थानेदार दयामयी से: "चलो सीधी तरह से, नहीं तो यह हण्टर देखा है?" शोर मचता है: "बड़े शर्म की बात है। गरीब, निरपराध स्त्रियों को ये पुलिस वाले मारे डाल रहे हैं।"]

दूसरा आदमी पुलिस का राज है न। जब रक्षक ही भक्षक हो जाय तो कोई क्या कर सकता है?

[नेपथ्य में शोर बढ़ता जाता है। थानेदार घबरा जाता है और

चुपचाप सिपाहियों के साथ बाहर निकल जाता है। वे तीनों रंगमंच पर आ जाती हैं और लोग देखते हैं जीवन के मुँह पर थप्पड़ के निशान उभर आए हैं। दयामयी के सिर से खून बह रहा है, रेणु के कपड़े फटे हैं। लोग क्रोध में पागल हो जाते हैं।]

पहला आदमी यह सरकार का राज है, जहाँ निरपराध स्त्रियों की बेइज्जती होती है।

दूसरा आदमी क्या अपराध था इनका ?

तीसरा आदमी (आगे आकर) रिपोर्ट करो, पुलिस पर केस चलाओ।

दूसरा आदमी किससे रिपोर्ट करोगे ? केस करोगे, सुनने वाला कौन है, फैसला देने वाला कौन है ? यह सरासर अत्याचार है, जुल्म है।

चौथा आदमी इस छोटे से लड़के को आज स्कूल से निकाल दिया, जैसे यह भी क्रान्तिकारी हो।

दूसरा आदमी किसी तरह गुजर-बसर करने वाली इस देवी की भी आज नौकरी छूट गई। कैसा जमाना है, कैसी सरकार है ?

[दयामयी खून पोंछती हुई निरीह दृष्टि से आसमान की ओर देखती है। रेणु मूर्च्छा से जागती है। जीवन रोकर माँ से चिपट जाता है और सुपकने लगता है।]

रेणु (प्यार से जीवन के सिर पर हाथ फेरकर) रोते हो ? बहादुर बाप के बेटे होकर रोते हो ? (दयामयी की ओर देखकर, खून पोंछती हुई) हाय, यह भी देखना बदा था !

दयामयी हाँ बेटी, आग से खेलने वालों का हाथ तो जलता ही है। चिन्ता मत करो। हमारे ऊपर किये गए अत्याचार स्वराज्य की नींव रख रहे हैं।

पहला आदमी (आगे बढ़कर) चिन्ता मत करो, माँ। हम तुम्हारी सहायता करेंगे।

दूसरा आदमी मैं कलेक्टर से रिपोर्ट करूँगा। आई० जी० से

मिलूँगा।

तीसरा आदमी मैं अखबारों में खबर छपवाऊँगा।

पहला आदमी रेणुदेवी को नौकरी दिलाने का जिम्मा मेरे ऊपर रहा। और तब तक मैं उनकी सहायता करूँगा। देखो, कोई जाकर एक डाक्टर को तो बुला लाओ।

दूसरा आदमी डाक्टर क्या करेगा?

पहला आदमी मैं उसका सर्टिफिकेट लेकर कलेक्टर से मिलूँगा।

[इसी समय दौड़ता हुआ एक आदमी आता है। "भागो, भागो, पुलिस की गारद आ रही है।" सब लोग खड़े होकर कहते हैं, "पुलिस!"]

एक आदमी आने दो पुलिस को।

दूसरा आदमी क्यों मरना चाहते हो, भागो। मालूम होता है कोई बड़ा कसूर किया है इन औरतों ने।

[दूर से घोड़ों की टापों की आवाज़ आती है।]

सब लोग—सचमुच पुलिस आ रही है, भागो।

[धीरे-धीरे सब खिसकने लगते हैं।]

दयामयी (चिल्लाकर व्यंग्य से) बस हो गई सहायता? जाओ, सब चले जाओ। आग से खेलने वाले दूसरे ही आदमी होते हैं। (अट्टहास करती है।)

रेणु सहायता करने आए थे। हमें किसी की सहायता की जरूरत नहीं है, माँ। आज मुझ में अनन्त बल आ गया है।

दयामयी घबराना नहीं बेटी, मौत बार-बार नहीं आती। बेटा जीवन!

जीवन मैं तुम्हारे साथ हूँ माँ!

रेणु हाँ माँ, उनकी मूर्ति ही हमारा सबसे बड़ा संबल है।

जीवन (घूरता हुआ) मैं सिपाहियों से नहीं डरता। मैं किसी से भी नहीं डरता।

रेणु और दयामयी बेटा !

[सिपाही दरवाज़ा तोड़कर घुस आते हैं और दोनों स्त्रियों को घेर लेते हैं।]

[परदा गिरता है।]

तीसरा दृश्य

[ऊबड़-खाबड़ जंगल का एक प्रदेश। फूँस की एक कुटी के सामने कुछ चटाइयाँ बिछी हैं। पूर्व की तरफ एक तख्त बिछा है। देखने से मालूम होता है किसी साधु की कुटी है। परदा उठते ही दो आदमी बातें करते हुए आते हैं। पहला व्यक्ति पच्चीस और तीस के बीच में है। स्वस्थ भरा-पूरा शरीर, ऊँचा कद, दाढ़ी बढ़ी हुई, रूएँ की टोपी पहने हुए, नीचे सलवार, ऊपर कोट, पेशावरी चप्पल, रंग गोरा। असली नाम है मनमोहन, लेकिन लोग उसको यासीन के नाम से पुकारते हैं। दूसरा युवक खाकी वर्दी में, निकर और कमीज़ पहने, जाड़े के दिनों के कारण ऊपर पुलओवर, स्टॉकिंग और बूट पहने है। रंग काला, उतावली प्रकृति का व्यक्ति, आँखें लाल, बातचीत में कठोर, कद मँझोला, नाम नीलूदा। नाम इसका वैसे और ही है।]

यासीन (बात पर जोर देकर) तो मैं कहता हूँ यह बहुत बुरा हुआ है। दिवाकर दादा चाहे कितने ही बड़े हों, कितने ही महान् हों, मैं और मेरी पार्टी उन्हें माफ नहीं कर सकती।

नीलूदा यह सिद्धान्तों का प्रश्न है और जो सिद्धान्त एक बार हमने बना लिए हैं, यदि कोई भी आदमी उनके विरुद्ध जाता है तो वह दण्डनीय है, यासीन।

यासीन पिछले एक हफ्ते तक मैं यही जानने के लिए मारा-मारा फिरता रहा हूँ। कहीं कोई पता नहीं लगा।

[इसी समय साधु वेश में, दाढ़ी बढ़ाये हुए, लम्बे बाल, अधेड़ उम्र, साँवला रंग, तीखे नक्श का एक व्यक्ति कुटी से निकलता है। नाम है पाँडे। वैसे लोग उनको स्वामी कहकर पुकारते हैं।]

स्वामी आ गए आप लोग।

यासीन जी।

स्वामी बैठिए। (तीनों चटाई पर बैठ जाते हैं) जरूरत इस बात की है कि ऐसे मामले में जो कुछ भी निर्णय हो वह सर्वसम्मति से होना चाहिए।

यासीन स्वामी, आपको मालूम है कि यह मामला कितना संगीन है। हो सकता है दिवाकर दादा की जरा-सी गलती से हम लोग एक-एक करके पकड़े जायँ। जो नियम हमने बनाए हैं उन पर तो पूरी तरह अमल करना ही चाहिए। कोई मजाक है? हम लोगों की एक-एक साँस, एक-एक कदम बँधा हुआ है। और इन्हीं की वजह से, अगर मुझसे पूछते हो, हमने मुरली को खो दिया।

नीलूदा यस, यस, ही शुड गो। हमारी पार्टी मे दो ही सजाएँ हैं या तो निकाल देना...

यासीन या फिर मौत। तीसरी कोई सजा नहीं।

नीलूदा माफी आप नहीं दे सकते।

यासीन उनका क्या बयान है?

स्वामी और लोग आ जायँ तब एक दफे ही बातचीत शुरू हो। तुम्हारे प्रान्त मे काम कैसा चल रहा है?

[राजेन्द्र आता है।]

नीलूदा लो राजेन्द्र आ गए। अब काम प्रारम्भ होना चाहिए।

स्वामी आइए बैठिए। (थोड़ी देर बाद) आपको मालूम है, कायदे से दिवाकर दादा हमारी पार्टी के सभापति हैं। लेकिन केस उन्हीं के खिलाफ है, इसलिए यह काम मेरे सुपुर्द हुआ है। दिवाकर यहीं हैं। उन्होंने भी अपना निर्णय आपके हाथो सौंप दिया है। निश्चय ही उनके खिलाफ दो बड़े अपराध हैं।

सब अपराध साफ हैं।

स्वामी- एक तो यह कि मनोहर के हाथ मे उन्हे अपने को नहीं

आने देना चाहिए था और दूसरे वीणा को पार्टी में शामिल होने की स्वीकृति देना, क्योंकि वीणा हमारे घोर शत्रु पुलिस के अफसर की पत्नी है। और तीसरा मुरली का पकड़ा जाना।

यासीन निश्चय ही अपराध संगीन हैं। उन्हें मनोहर के हाथों से भाग आना चाहिए था।

स्वामी दिवाकर का कहना है कि वह भाग नहीं सकते थे। फिर भी मैं मानता हूँ कि मनोहर के हाथों में अपने को पड़ने देना ही एक अपराध है।

राजेन्द्र जो काम उनके हाथ में सौंपा गया, हम मानते हैं वह काम उन्होंने पूरा किया।

नीलूदा वह मनोहर के हाथ कहाँ पड़े? क्या पुल के पास?

स्वामी वहाँ से दो मील दूर एक पुलिया के नीचे।

नीलूदा बात यह है कि अपराध तो उन्होंने किया है। पार्टी के सिद्धान्त की दृष्टि से जब मनोहर ने उन्हें पहचान लिया और वह उसके यहाँ रहे तो अपराधी हो गए।

स्वामी—वह उनका पुराना क्लासफेलो था। जहाँ तक मनोहर का सवाल है वह चाहता तो उन्हें पकड़कर सरकारी पुरस्कार पा सकता था, लेकिन उसने वैसा नहीं किया। इससे साफ है कि मनोहर जहाँ दिवाकर की इज्जत करता है वहाँ उनके काम की भी।

यासीन मेरा खयाल है अब हम सब लोग एक ही बार में पकड़े जायँगे। हमारे दल में ऐसे आदमियों की कमी नहीं रही है।

नीलूदा हियर यू आर, यासीन। यही बात है। मैं विश्वास ही नहीं कर सकता कि अब हमारा कोई मुक्ति का मार्ग है। ये पुलिस वाले किसी के सगे नहीं होते। हम लोगों का खातमा करने के लिए रस्सी ढीली की गई है।

यासीन मुश्किल तो यह है कि हम अपना शस्त्रागार और बम फैक्टरी भी जल्दी ही यहाँ से नहीं उठा सकते। यदि दिवाकर ने विश्वास करके वीणा को वे स्थान बता दिये हों?

राजेन्द्र बड़ी कठिन समस्या है। दिवाकर दा कहते हैं जो कुछ हुआ है उसके लिए वह उत्तरदायी हैं। क्या हम लोग विश्वास कर लें?

नीलूदा यहाँ प्रश्न दिवाकर दादा का नहीं है। एक व्यक्ति का है। व्यक्ति के गुण-दोषों के अनुसार ही हमें दण्ड देना होगा।

यासीन मैं नीलूदा से सहमत हूँ। उनके ऊपर विश्वास करने का अर्थ है हमारी सबकी मौत।

स्वामी मैं समझता हूँ दिवाकर दादा के मनोहर के यहाँ रहने की अपेक्षा वीणा को पार्टी में बिना आज्ञा शामिल करना भयंकर विद्रोह है। उस पर किसी तरह विश्वास नहीं किया जा सकता।

नीलूदा आप ठीक कहते हैं।

स्वामी क्या वीणा की परीक्षा लेने तक मामले को स्थगित नहीं किया जा सकता?

यासीन तब तक हम लोगों की समाप्ति हो गई तो?

नीलूदा मेरा मत है अनुशासन की दृष्टि से उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाना चाहिए।

राजेन्द्र क्या आप दिवाकर दा के अभाव की पूर्ति कर सकते हैं?

स्वामी मुझे ऐसा मालूम होता है कि अनुशासन समिति दिवाकर को दण्ड देने के पक्ष में तो है···

कुछ हाँ।

राजेन्द्र लेकिन···

यासीन लेकिन-वेकिन कुछ नहीं।

स्वामी मैं ठण्डे दिल से आपसे एक बार पुनर्विचार के लिए प्रार्थना करता हूँ। कहीं ऐसा न हो कि हमको पछताना पड़े।

यासीन ठण्डा दिल बूढ़ों का होता है।

नीलूदा हमको एक जगह इतने आदमियों को एकत्रित नहीं होना चाहिए। मुझे डर है कहीं पुलिस का आक्रमण न हो जाय।

यासीन मैं यह मानकर चलता हूँ कि दिवाकर दा अपराधी हैं।

नीखूदा यह कोई नई बात नहीं।

यासीन फैसला हो गया। काश, मनुष्य गलतियाँ न करता!

राजेन्द्र (बात पर जोर देकर) फिर भी जितनी जल्दी आप फैसला करना चाहते हैं मैं चाहता हूँ इतनी जल्दी न की जाय। (सब लोग बोलने लगते हैं) बात यह है दिवाकर दा हमारी पार्टी के मामूली सदस्य नहीं हैं। वह हमारे मार्गदर्शक और कमांडर रहे हैं। उन्होंने जितने काम किये हैं, अब तक जितनी सफलता हमें मिली है, उसमें उनका बहुत बड़ा हाथ रहा है। दुर्भाग्य की बात है कि न चाहते हुए भी वह ऐसी परिस्थिति में पड़ गए कि उससे उनका छुटकारा असम्भव था।

नीखूदा क्या आप लेक्चर दे रहे हैं?

यासीन हम लोगों को बहुत घुमा-फिराकर बातें नहीं करनी चाहिएँ। सीधी दो टूक-बात कीजिए।

राजेन्द्र जल्दी न करो। मामला काफी संगीन है।

नीखूदा- (अट्टहास करके) सारा आसमान पिद्दी के पैरों पर नहीं खड़ा है। नरेन गोस्वामी की कहानी पुरानी नहीं है।

राजेन्द्र (क्रोध से) दिवाकर दा पिद्दी नहीं हैं। हम लोग उनके सामने पिद्दी हैं, बच्चे हैं। क्रान्तिकारी दल का उनका पुराना अनुभव है। उन्होंने जो-जो काम किये हैं उन्हें करने के लिए हमें मुँह धो लेना चाहिए।

यासीन यह पार्टी की तौहीन है।

स्वामी राजेन्द्र को बोलने दीजिए।

राजेन्द्र फिर भी सबसे बड़ी बात यह है कि दिवाकर दा ने वहाँ रहते हुए न तो पार्टी का भेद दिया न सरेण्डर ही किया।

यासीन यह आप कैसे कह सकते हैं?

राजेन्द्र इसलिए कि हम अभी तक सुरक्षित हैं, अन्यथा आप यहाँ न दिखाई देते। यह उनका ही चरित्र है कि वीणा-जैसी सुख में पली स्त्री भी उनके प्रभाव से हमारे दल में सम्मिलित हुई।

स्वामी यह अभी साध्य है, सिद्ध नहीं। हाँ, आगे कहिए।

राजेन्द्र मैंने मुरली की तलाश मे दिवाकर दा के घर का पता लगाया था। उनकी माँ और स्त्री का बुरा हाल है। रेणु को नौकरी से निकाल दिया गया। अब तक जो गुजारे का सहारा था वह भी गया। उनके लड़के जीवन को भी स्कूल से हटा दिया गया। पुलिस को मुरली के पहुँचने की खबर लग गई। उसने मुरली का पता जानने के लिए उन्हे पीटा। थाने मे दो दिनों तक भूखा-प्यासा बन्द रखा। यहाँ तक कि दिवाकर दा की माँ तभी से बेहोश हैं। शायद वे आखिरी साँस ले रही हैं। रेणु बड़ी दयनीय स्थिति मे है। दिवाकर दा का अकेले का ही त्याग नहीं है।

यासीन उनके परिवार की बात सुनकर हमे दुख है। पर सवाल यह है, क्या हम कोई मदद भी कर सकते हैं?

स्वामी हम लोगों का उद्देश्य जितना पवित्र है मार्ग उतना ही विकट; साध्य उतना ही कठिन। स्वतन्त्रता के लिए स्नेह की भावनाओं को हमें तिलांजलि देनी पड़ती है। घरबार, स्त्री, पुत्र, माता, भाई, बहन सब हमारे लिए हीन हैं। मैं पूछता हूँ एक ओर तुम्हारी मरणासन्न माँ है, दूसरी ओर पार्टी का काम, तुम कौनसा काम पहले करोगे?

नीलूदा निश्चय ही पार्टी का।

यासीन फिर दिवाकर दा के घर का जिक्र छोड़ो। मेरी माँ पाँच मास तक बीमारी में केवल मुझे एक बार देखने के लिए छटपटाती रहीं। मैं भी चाहता था। पर क्या मैं जा सकता था? मेरी ड्यूटी लगी थी। मुझे बाहर जाना पड़ा और इसी बीच उनका देहान्त हो गया।

नीलूदा दूर जाने की क्या जरूरत है? इन्हीं स्वामी की पत्नी तपेदिक में तीन साल बीमार रही और मर गई। क्या यह जा सके? जाने-जाने की सोचते हुए भी जब यह पहुँचे तब उस बेचारी की अर्थी निकल रही थी। यह देखकर पाँडे जी उस अर्थी को नमस्कार कर लौट आए। न घर मे घुसे, न श्मशान तक ही गए।

स्वामी शारीरिक प्रेम को हमारी पार्टी मे स्थान नहीं है। मैं आपकी बातों से इस निश्चय पर पहुँचा हूँ कि दिवाकर दा को एक ही दण्ड दिया

जाय कि वह ट्यूडर की हत्या कर दें। और यदि उसमें उनकी मृत्यु भी हो जाय तो वह उनका प्रायश्चित होगा (सब लोग बोलने लगते हैं। कुछ देर बाद सदस्यों के शान्त हो जाने पर) मैं वीणा की परीक्षा लूँगा। वह उसकी कठिनतम परीक्षा होगी। यही मेरा तात्कालिक निर्णय है। अन्तिम निर्णय के लिए मैं यासीन के ऊपर दायित्व सौंपूँगा।

[उस समय वातावरण में एक प्रकार की चुप्पी, भयंकरता छा जाती है। परिणाम की गंभीरता को याद करके सब चुप हो जाते हैं।]

यासीन मैं आपका उद्देश्य जान सकता हूँ?

स्वामी नहीं। तुम थोड़ी देर बाद मुझसे मिलोगे। आप लोग जाइए।

[सब लोग धीरे-धीरे इधर-उधर हो जाते हैं। स्वामी ताली बजाता है। एक नवयुवक सम्मुख आकर खड़ा हो जाता है।]

स्वामी वीणा को बुलाओ।

[युवक चला जाता है। स्वामी एक काग़ज़ पर कुछ लिखते हैं, उसी समय वीणा प्रवेश करती है।] तुम्हारा नाम वीणा है?

वीणा जी!

स्वामी पुलिस इन्स्पेक्टर मनोहरसिंह की पत्नी?

वीणा वह मेरा पति नहीं। मैंने उसके साथ सम्बन्ध त्याग दिया है।

स्वामी धर्मशास्त्र में तो पति-पत्नी का सम्बन्ध अमर है।

वीणा वह मनुष्य नहीं है। वासनालोलुप और देशद्रोही है।

स्वामी तुम्हारे ये वाक्य तुम्हें दल में सम्मिलित करने के लिए काफी चिकने-चुपड़े दिखाई देते हैं।

वीणा आप क्या कहना चाहते हैं?

स्वामी तुम दल में शामिल होना चाहती हो?

वीणा यदि हो सकूँ।

स्वामी उस दल में, तुम्हारा पति जिसका घोर शत्रु है। और मौका पाते ही हम में से एक-एक को फाँसी पर लटका देना चाहता है।

वीणा मैं इस काम में उसके साथ नहीं हूँ। मैं उसको अपना पति स्वीकार नही करती।

स्वामी यह हम कैसे विश्वास कर लें कि तुम्हारा वचन सत्य है?

वीणा इससे अधिक विश्वास उत्पन्न करने का क्या उपाय है, मैं नहीं जानती।

स्वामी खैर, क्या तुम्हारा अब कभी भी उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा?

वीणा मैं इसका उत्तर क्या दे सकती हूँ?

स्वामी (थोडी देर चुप्पी) तुमने हमारे दल का उद्देश्य जान लिया है?

वीणा जी!

स्वामी उससे पूर्णतया सहमत हो?

वीणा जी!

स्वामी यह आग पर चलने का मार्ग है। स्नेह, प्रेम नाम की कोई चीज यहाँ नहीं है। संयम, ब्रह्मचर्य, कर्त्तव्य और देशप्रेम, शत्रुओं से मातृभूमि का उद्धार।

वीणा मैं स्वीकार करती हूँ।

स्वामी तो तुम्हारा निश्चय दृढ़ है?

वीणा मै क्षत्रिय की कन्या हूँ।

स्वामी तुम्हारे पिता क्या काम करते थे?

वीणा —उनके पिता गदर के मुखिया थे। १८५७ में सिपाही विद्रोह के मुखिया थे और उनके पुत्र, मेरे पिता सब जागीर छिन जाने पर जन्म-भर हिंसा की आग में जलते रहे।

स्वामी (चौंककर) क्या?

वीणा जब वह शत्रुओं को नहीं मार पाते थे तो शिकार करते थे।

स्वामी ठीक है। दल मे शामिल होने से पहले तुम्हे परीक्षा देनी होगी।

वीणा मैं तैयार हूँ। कहिए शरीर के किस अंग को काट डालूँ ?

स्वामी ट्यूडर की हत्या।

वीणा कर सकूँगी।

स्वामी मनोहरसिंह की हत्या ? (इतना कहकर स्वामी बड़ी तीव्र दृष्टि से वीणा को देखता है। वीणा अप्रत्याशित रूप से एकदम सिहर उठती है, जैसे कोई वज्र गिर गया हो। थोड़ी देर बाद स्वस्थ होकर स्वामी की तरफ़ देखती है) पहले मनोहर की, बाद मे ट्यूडर की। ये दोनों हमारे घोर शत्रु हैं। बोलो।

[वीणा चुप रहती है।]

स्वामी साहस बटोरकर देखो, वैसे तुम्हारी कोठी भी दूर नही है।

वीणा (सिर उठाकर) मैं ट्यूडर को मार सकूँगी।

स्वामी तो वापस लौट जाओ। इसी समय चली जाओ। (ताली बजाने लगता है।)

वीणा -मुझे सोचने दीजिए।

स्वामी हमारे दल में सोचने का अधिकार केवल नेता को मिला है। पहले मनोहर को। अभी उत्तर चाहिए, इसी क्षण।

वीणा मैं भी मनुष्य हूँ और उसमें भी स्त्री।

स्वामी (स्नेह मुद्रा में) जानता हूँ। पर हमको अपने दल के लिए लोहे के आदमी चाहिएँ। मनोहर हमारा शत्रु है, देश का शत्रु और तुम्हारा भी शत्रु। शत्रु के साथ शत्रु की तरह व्यवहार करना चाहिए न। यह महाभारत का युद्ध है, वीणा देवी। कर्तव्य के लिए हमे युद्ध करना है, चाहे कोई भी हो।

[वीणा चुप रहती है।]

स्वामी दल में हमारा केवल एक ही सम्बन्ध है साथी का, काम करने वाले का। यहाँ न कोई मित्र है, न माँ, न बहन, न पति, न पत्नी।

वीणा (बहुत देर चुप रहने के बाद) मैं···मैं (दृढ़ होकर) मैं ···मनोहर की हत्या करूँगी। मुझे स्वीकार है।

स्वामी तुम वीर क्षत्राणी हो।

वीणा मुझे दल मे ले लिया जायगा?

स्वामी मनोहर को मारने के बाद तुम्हें एक काम और करना होगा।

वीणा करूँगी।

स्वामी पार्टी ने दिवाकर को प्राणदण्ड दिया है।

वीणा (जैसे उसके पैरों के नीचे से जमीन सरक गई हो) प्राण दण्ड? क्यों?

स्वामी कारण जानने की आवश्यकता नहीं है। (वीणा की ओर देखता है। वह सिर पकड़कर बैठ जाती है) अर्जुन ने भीष्म की हत्या की थी न और अपने गुरु द्रोणाचार्य को भी मारा था। तुम्हे भी उसकी लाश को ठिकाने लगाने मे सहायता करनी होगी। उसको गोली से मार देने के बाद तुम्हे बुलाया जायगा। सोच लो, मैं आता हूँ।

[निकल जाता है। वीणा पत्थर की तरह जड़ बनी बैठी रहती है फटी-फटी आँखें, उतरा हुआ चेहरा, निसंज्ञ, मूक।]

वीणा दिवाकर को प्राणदंड? क्या किया है उन्होंने? बहुत बड़ा दंड है। मुझ मे इतना साहस नहीं, इतना बल नहीं है। मैं मनुष्य हूँ। वह ठीक कहते थे, दिवाकर दादा ठीक कहते थे। हमारे दल में काम मौत को खूँदकर, अभिलाषाओं को कुचलकर, आशाओं को पीसकर, बिजलियों का आलिंगन करना है। जहाँ मृत्यु के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। चाहे शत्रु की हो या उसके अभाव में अपनी, पर उन्हें प्राणदंड, नहीं, यह सब झूठ है। यह मेरी परीक्षा ली जा रही है। इन लोगों की परीक्षा भी तो बड़ी कठोर होती है। तभी तो तिल-तिल करके प्राण हरने वाले पुलिस के अत्याचारों से भी ये पीछे नहीं हटते। कन्हाई लाल, खुदीराम, यतेन्द्र मुखर्जी करतारसिंह जैसे वीर पुरुष इस दल ने तैयार किए हैं। यहाँ आदमी नहीं हैं, आग पर खेल-ही-खेल में प्राण झोंकने वाले देवोत्तर मनुष्य हैं। (कुछ सोचकर) देखा नहीं स्टील की तरह जमी हुई निर्णायक की कठोर आँखो मे रस का कहीं नाम भी नहीं है। जैसे यह आदमी नहीं, आदमी का भूत

है। यम की काली छाया है। और दिवाकर ? वह ही क्या कम हैं जो संसार में किसी से नहीं डरते। ठीक है, यहाँ एक ही सम्बन्ध है साथी का। क्या मैं कर सकूँगी ? मनोहर की हत्या, तथाकथित पति की हत्या। जिसके आलिंगन पाश में, जिसकी गरम-गरम साँसों के प्याले में मैंने जीवन का मधु पिया है, उसकी हत्या ? पहले उसी को मारना होगा ? मैंने उसकी स्वीकृति उस लोहे के आदमी को दे दी है। जिसकी भीतर धुसी आँखें पिस्तौल की गोली की तरह चमकती हैं। जिसके लकड़ी-से हाथ पिस्तौल से कड़े हैं। वह भी तो आदमी है। क्या इस दल मे सभी ऐसे हैं। एक दिवाकर को देखा और दूसरा यह व्यक्ति। न इनमें मोह है न माया। किन्तु यह सब देश के लिए है, मातृभूमि की मुक्ति के लिए है। महाभारत''महाभारत युद्ध मे भी भाई-भतीजे का सम्बन्ध नही रहा था। उन्होंने ठीक ही कहा है। मै भी करूँगी। मेरे भीतर भी महाभारत के लोगों का रक्त बह रहा है। मुझे स्वीकार है। (सहसा स्वामी का जलती मोमबत्ती लिये प्रवेश) मुझे स्वीकार है।

स्वामी—कल्पना नहीं।

वीणा मैं दो बात कहना नहीं जानती।

स्वामी पार्टी को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है। इस मोमबत्ती की लौ पर हाथ रख दो।

वीणा लाइये। आपको कभी मुझसे शिकायत नहीं होगी।

[निश्चल भाव से वीणा मोमबत्ती की लौ पर अपना हाथ रखे रहती है।]

स्वामी बस करो। (ताली बजाने पर वही युवक आता है) इन्हे उसी स्थान पर ले जाओ।

[वीणा जाती है। सहसा दिवाकर का प्रवेश।]

स्वामी मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।

दिवाकर मैं प्रसन्न हूँ, पार्टी अपने निर्णय मे दृढ रही।

स्वामी तो क्या तुम जान गए ?

दिवाकर मै तैयार हूँ। मुझे डर था कहीं तुम लोग कर्तव्य से न ६८
जाओ।

स्वामी- -(दिवाकर के पैरों में गिरकर) दादा !

दिवाकर -(स्वामी को गले लगाकर) दुखी मत हो स्वामी, हम लोग कर्तव्य-पालन के लिए यहाँ इकट्ठे हुए हैं। मैं स्वीकार करता हूँ। मेरे दोनो अपराध संगीन हैं। मनोहर के यहाँ रहना यदि मेरी विवशता है तो वीणा मेरी कमजोरी। मैं कमजोर हूँ न ? कमजोर के लिए पार्टी में कोई स्थान नहीं है। मैं स्वयं चाहता था अपने इस पाप का परिमार्जन करना।

स्वामी हम लोग विश्वास नहीं कर पा रहे हैं।

दिवाकर वीणा को मैंने ही पार्टी मे शामिल होने की प्रेरणा दी है। मै ही उसे लाया हूँ। मैं नहीं जानता मैंने क्या किया ?

स्वामी- -मैं स्त्रियों को पार्टी मैं शामिल करना कमजोरी मानता हूँ।

दिवाकर- पर वह आ गई। वह अपने शराबी पति से घृणा करती है। वह न केवल पुलिस का अफसर है, व्यभिचारी भी है।

स्वामी -आप लोग उसके शिकंजे से छूटे कैसे ?

दिवाकर वीणा ने मुझे बताया कि आज रात को ही मनोहर मेरी हत्या कर देगा। मैं सकपकाया। भागने का रास्ता नहीं था। मैं पकड़ा जाता।

स्वामी फिर ?

दिवाकर- -वीणा ने ही मुझे निश्चिन्त किया। वह रात होते ही उसे कोठी मे ले गई और बहुत तेज शराब खाने के साथ ही पिला दी। वह खाना खाकर लेट गया। वीणा ने एक और तेज डोज मनोहर को पिलाया। फिर उसके पूरी तरह बेसुध हो जाने पर हम लोग भाग आये।

स्वामी- वीणा के परीक्षा में उत्तीर्ण होने की सम्भावना है। वह मनोहर की हत्या करेगी, उसके बाद भी उसको एक काम सौंपा गया है।

दिवाकर- -वीणा मेरी कमजोरी भी है मेरी दृढ़ता को पीछे खींचने वाली सौन्दर्य और स्नेह की रस्सी। मै उसे अपनी कमजोर अवस्था

मैं ही पार्टी में लाया। मैं अपने पर काबू न रख सका। यदि वह…

स्वामी मेरा विश्वास है वीणा एक दिन हमारे गर्व का कारण बनेगी।

दिवाकर (खड़ा होकर) अच्छा।

स्वामी (रोककर) मैं क्षमा चाहता हूँ, दादा। हमारा दल तुम्हारे बिना कैसे काम कर सकेगा? हम कहीं के नहीं रहेंगे। हमारी पार्टी का निर्णय गलत है।

दिवाकर गलत होने पर भी वह सही है। यदि हम पार्टी को दृढ़ता से सुरक्षित रख सकें, अपने उद्देश्य के प्रति उसे जागरूक रख सकें, तभी हम इतना बड़ा संग्राम कर सकते हैं। मैं तुम्हारे निर्णय को स्वीकार करता हूँ।

स्वामी हम लोग कमजोर हैं, निर्बल हैं, निःसहाय हो जायेंगे।

दिवाकर कर्तव्य हमारा सबसे बड़ा संबल होना चाहिए, स्वामी। मातृभूमि की मुक्ति हमारा ध्येय है। उस ध्येय का पालन करने के लिए उसे सुव्यवस्थित रखने के लिए हमारे नियम हैं। तुम चिन्ता मत करो, स्वामी।

स्वामी अपनी कमजोरी को मानना, अपने अपराध को स्वीकार करना सबसे बड़ा प्रायश्चित है। यदि आप कहें तो…

दिवाकर मैं पार्टी का निर्णय मानूँगा। यह तुम्हारी भी एक परीक्षा थी। अब निर्णय नहीं बदल सकता। तुम कमजोर मत बनो।

स्वामी आप धन्य हैं। आपका जीवन धन्य है।

दिवाकर किन्तु मैं चाहता था कि एक बार…

स्वामी आप क्या चाहते हैं?

दिवाकर मेरा परिवार…यह मेरी दूसरी कमजोरी है, स्वामी।

स्वामी- आप लिखकर दे दीजिए, मैं यत्न करूँगा।

दिवाकर बस इतना ही? मैं प्रतीक्षा करूँगा। (दिवाकर एक कागज पर लिखकर स्वामी को देता हुआ चलने लगता है।)

स्वामी (कागज हाथ में लेकर दिवाकर की ओर देखता हुआ) ठीक है। पर सुनिए दादा।

दिवाकर (लौटकर) कहो।

स्वामी मैं एक बात पूछना चाहता हूँ। आपको हमारे निर्णय पर असन्तोष तो नहीं है? क्या आप भी यही निर्णय देते?

दिवाकर (गम्भीर होकर) यह सब व्यर्थ है। (जाने लगता है।)

स्वामी (चिल्लाकर निहोरे के स्वर में) मैं आजीवन पश्चात्ताप की आग में जलता रहूँगा, दादा। मेरा उद्धार करते जाइए।

दिवाकर पार्टी के सामने व्यक्ति कुछ भी नहीं है। (जाता है।)

स्वामी मैं आपसे आशीर्वाद पाना चाहता हूँ।

दिवाकर (दूर से बोलता हुआ) सत्य वही है जिसको सब स्वीकार करते हैं; यही मैंने जाना है। तुम सुखी रहो। देश धर्म का पालन करो स्वामी!

[देर तक प्रतिध्वनि आती रहती है। स्वामी भौचक्का-सा खड़ा रहता है।]

[परदा गिरता है।]

चौथा दृश्य

[तीसरे दृश्य का वैसा ही एक घना जंगल। नीलूदा बेचैनी से टहल रहा है। उसी वेश में।]

नीलूदा (अपने आप) न जाने क्या हुआ, यतीन को अब तक आ जाना चाहिए। राजेन्द्र भी नहीं आए, स्वामी भी नहीं। किसी का भी कुछ पता नहीं है। क्या हुए सब लोग? कहीं वे पकड़े तो नहीं गए? सुना है जमकर गोलियाँ चलीं। कौन मरा यह भी नहीं मालूम हुआ। (रुककर) माँ, तुम स्वतन्त्र हो, तुम गौरवमयी हो, यही मेरी कामना है। मुझ में मरने की शक्ति दो। तुम्हीं ईश्वर हो, तुम्हीं देवता, तुम्हीं शक्ति।

[स्वामी आता है।]

स्वामी नीलूदा, तुम कब से हो?

नीलूदा (चौंककर) स्वामी, कुछ पता लगा?

स्वामी नहीं। मैं पिछले दिनों केवल दस बम बना पाया। वे ही सब दे दिए।

नीलूदा घातक?

स्वामी बस अब परिणाम की प्रतीक्षा है।

नीलूदा सुनता हूँ डटकर गोलियाँ चलीं।

स्वामी दूर-दूर तक विस्फोट की आवाज हुई है। मुझे तो प्रत्येक धड़ाके के साथ एक प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव हुआ। जैसे स्वतन्त्रता देवी को सिंहासन पर बिठाने के समय उत्सव मनाया जा रहा हो।

नीलूदा कपड़े बदल डालते। बारूद की बू आ रही है।

स्वामी (प्रकृतिस्थ होकर) याद ही नहीं रहा। रात-भर सामान तैयार करता रहा। नीलूदा, हमको यहाँ से भी जगह बदलनी होगी। जरा

देख आऊँ ।

नीलूदा नहीं-नहीं, उधर नहीं। जो बचकर आ जाय वही गनीमत है ।

स्वामी हम लोगों ने वीणा को परीक्षा की अग्नि मे डाल दिया है ।

[हाँफता हुआ राजेन्द्र आता है । स्वामी और नीलूदा साँस साध कर उसकी ओर देखने लगते हैं । जैसे उनकी दृष्टि ही एक प्रश्न है ।]

राजेन्द्र धर-पकड बडी तेजी से हो रही है, जैसे सारी पृथ्वी पर अविश्वास छा गया हो ।

स्वामी वीणा का क्या हुआ ?

राजेन्द्र मैं कुछ नही कह सकता । रात को एक बजे तक कही कुछ सुनाई नही दिया । वीणा को भी मैं देख नही पाया कि इसी समय किसी की हत्या से सारा वातावरण क्षुब्ध हो उठा । सन्देह में पचासों आदमी पकड़े गए हैं ।

स्वामी (उछलकर) तो ट्यूडर मारा गया ?

राजेन्द्र ठीक तो नहीं कह सकता, मगर इतना निश्चित है कि जो आदमी मारा गया है वह ट्यूडर ही होगा । सारे शहर मे पुलिस का जाल बिछ गया है । इसीलिए हम पूरी तरह से छानबीन नहीं कर सके । यहाँ से तो वीणा तैयार थी ?

नीलूदा बँगले पर पहुँचते ही शायद उसका विचार बदल गया ।

स्वामी इसीलिए स्थान बदलने की आवश्यकता हुई । मान लो वीणा ने मनोहर की हत्या कर दी···

राजेन्द्र रामदास को मैं वहाँ छोड आया हूँ । मनोहर के बँगले के पास जो चमारों के झोपडे हैं उन्हीं में वह डटा हुआ है । जूते पर पालिश और उन्हे गाँठना सीख गया है ।

स्वामी यासीन अभी नही आए जबकि उन्हे हमारे यहाँ आने से पहले आ जाना चाहिए था ।

नीलूदा हमारी क्रान्ति उस समय तक सफल नहीं हो सकती जब तक

हम जनता का विश्वास न प्राप्त करें। खुदीराम को आखिर जनता ने ही पकड़वाया था।

स्वामी—उस भूल के लिए जनता को पछताना भी पड़ा।

नीलूदा—फिर भी हमारी भूल तो थी ही और अब भी है। हमारी बहुत-सी असफलता का कारण यह है कि जनता हमारे उद्देश्य से जानकारी नहीं रखती। मुझे तो लगता है जैसे दिवाकर दा के कारण हमारा एक आदमी पकड़ा गया वैसे ही हम लोग एक-न-एक दिन जरूर पकड़े जायँगे। वीणा को पार्टी में लाना बहुत बड़ी गलती हुई।

स्वामी—मुझे तुम्हारी बात ठीक लगती है, नीलूदा। हमें स्थान और कार्यक्रम बदलना होगा।

नीलूदा—मुझे लगता है दिवाकर दा ट्यूडर को मारते-मारते कहीं हमें ही न मरवा दें। यासीन का न आना भी मुझे शक में डाल रहा है। शायद इसीलिए दिवाकर ने पार्टी के हाथों मरने की बजाय ट्यूडर को मारकर स्वयं मरने की इच्छा प्रकट की हो। यह भी एक बहाना ही है।

राजेन्द्र—तुम बहुत आगे बढ़े जा रहे हो, नीलू। मैं कभी नहीं मान सकता कि दिवाकर दा जैसा तपा हुआ क्रान्तिकारी कभी धोखा दे सकता है।

स्वामी—लेकिन यासीन को तो बहुत पहले आ जाना चाहिए था।

नीलूदा—यासीन नहीं लौटेंगे। अकेले दिवाकर के कारण हमारे हाथ से दो आदमी छिन गए।

स्वामी—मैं कुछ भी नहीं समझ पा रहा हूँ। राजेन्द्र, तुम भी पूरी खबर न ला सके। वायसराय की यात्रा का क्या हुआ?

राजेन्द्र—स्थगित हो गई। लेकिन हमारी तरफ से पूरी तैयारी है।

स्वामी—अगर यह काम हो जाय तो क्या कहने हैं। सारा देश जैसे गूँगा हो गया है, निष्क्रिय। कभी-कभी सोचता हूँ एक तरफ तेतीस करोड़ है और दूसरी तरफ दो लाख। कोई संख्या भी तो हो।

नीलूदा—यदि उधर दो लाख हैं तो इधर तो दो हजार भी नहीं हैं। हमारे ही भाई शत्रु हैं। जैसे सबको साँप सूँघ गया है।

राजेन्द्र गुलामी भी एक नशा है, अफीम की तरह।

स्वामी यासीन क्यो नही आ रहा ?

[वातावरण में घुटन फैल जाती है। सबके चेहरे उदास हो जाते हैं। प्रतीक्षा और सन्देह जैसे ये दो ही क्रान्तिकारियो के दुर्भाग्य-चिह्न हैं।]

नीलूदा दिवाकर दा को मौका देकर पार्टी ने वहुत वडी गलती की।

राजेन्द्र चुप रहो।

नीलूदा तुम मेरी जबान बन्द नहीं कर सकते, मे कहूँगा, फिर कहूँगा।

राजेन्द्र- (पिस्तौल निकालकर) बोलते ही जा रहे हो।

नीलूदा (जवाब में वैसे ही पिस्तौल निकालकर) आ जाओ। मरने से मैं भी नहीं डरता।

स्वामी- क्या करते हो, राजेन्द्र, नीलूदा।

[दोनों पिस्तौलें जेब में रख लेते हैं।]

राजेन्द्र (हँस कर) पिस्तौल उसी की दोस्त है जिसके हाथ मे हो। (अंगड़ाई लेकर बैठ जाता है) रात-भर सो नही सका।

[इसी समय बाल बिखेरे हुए रेणु आती है। उसके मुँह पर मार के निशान हैं। जहाँ-तहाँ खून के दाग हैं। रेणु को आते देखकर लोग एकदम घबरा उठते हैं।]

रेणु (चिल्लाकर) कहॉ हैं वह ? कहॉ हैं ? कहॉ हैं ? बोलो, बोलते क्यों नही ?

राजेन्द्र भाभी !

रेणु राजेन्द्र ! (थोडी देर चुप रहकर) विश्वासघात किया उन्होंने। हमारे मुँह पर कालिख पोत दी। गरीबी मे पला हमारा सात्विक जीवन, उद्देश्यहीन और पाप की कीचड़ से सानकर अपना सुख, अपनी कमजोरी को छिपाने वाले को मैं देखने आई हूँ। कहॉ है वह ? तुम लोग देखते रहे और वह इतने नीचे उतर गए ? आसमान मे चमकने वाला शुक्र, निर्मल निश्छल शुक्र-तारक प्रलय के बादलों में छिप गया और तुम देखते रहे ?

माँ (धीमे स्वर में आवाज धीरे-धीरे बढ़ती चली जा रही है) जैसे ही माँ ने सुना उनके प्राण निकल गए। हम कष्ट सह रहे थे, भूखे थे, नगे थे फिर भी एक गौरव था कि वह देश के काम मे लगे है। पुलिस ने माँ को बेत लगाए। मुझे पीटा। हमको तीन दिन तक बिना पानी और दाने के बन्द रखा। गालियाँ दीं। माँ का शरीर लोहू लुहान कर दिया। (स्वर धीमा) पर एक सान्त्वना थी। (थोड़ी देर चुप रहकर) मालिक मकान ने हमारा सामान निकालकर बाहर फेंक दिया। हम बेघरबार हो गए, (स्वर धीमा) फिर भी सन्तोष था, अभिमान था। गर्व से मैं लोगों की ओर देखती थी। डरते सहमते हुए लोगों मे भी हमारे लिए एक आदर की दृष्टि थी। लुक-छिपकर सहायता लेने की प्रार्थना हमसे की जाती थी। लेकिन आज मेरा वह संचित धन लुट गया। बोलो, बोलते क्यों नहीं? (चिल्लाकर) कहाँ है वह? मै स्वयं उनको मारूँगी, और खुद मर जाऊँगी। (सब लोग चुप हैं, निस्तब्ध। रेणु क्षण-प्रतिक्षण उग्र होती जा रही है) माँ, तुम्हे भी अपने पुत्र का यह कुरूप अन्त देखना बदा था। मै क्या करूँ? अब हम लोग किस गौरव के सहारे जीएँगे। मेरा पुत्र (क्रोध से) जब लोग कहेंगे यह है उस डर-पोक, बुजदिल, क्रान्तिकारी का लडका।

स्वामी बहन, शान्त हो।

रेणु (उबलकर) शान्त! तुम मुझे शान्त होने को कहते हो, जिसका सब कुछ लुट गया?

राजेन्द्र हमें विश्वास है जो भार उन्होंने अपने ऊपर लिया है उस से उनका मस्तक ऊँचा होगा।

[हाँफती हुई वीणा प्रवेश करती है। सब लोग उत्सुकता से देखने लगते हैं।]

वीणा (हाँफती हुई) क्रान्तिकारी के सामने न कोई भाई है, न बहन, न पति, न पिता, न कोई सम्बन्धी।

[स्वामी उसके मुँह की तरफ देखता है।]

वीणा -मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई हूँ। मनोहर को मैंने मार दिया।

सब लोग- (उछलकर) मार दिया !

वीणा मैंने सोते हुए अपने पति की नहीं, देश के शत्रु की हत्या कर दी। सुनती हूँ दिवाकर दा ने ट्यूडर की हत्या कर दी।

सब लोग क्रान्ति विजयिनी हो। दिवाकर दा धन्य हैं।

रेणु क्या ? क्या कहा ?

स्वामी आज दिवाकर दा ने वह काम किया है जिसके लिए हमारा इतिहास अमर हो जायगा। क्या वह जीवित हैं ?

नीलूदा (दबे स्वर में) उन्हें जीवित रहना चाहिए।

राजेन्द्र (चिल्लाकर) उनका प्रायश्चित पूरा हुआ। वह हमारे नेता हैं। स्वामी, उनका जीवन जरूरी है। बोलिए, वीणा देवी, दिवाकर दा कहाँ हैं ? उन्हे जीना होगा, देश के लिए जीना होगा। पार्टी अपना निर्णय वापिस लेती है। बोलिए !

नीलूदा—ट्यूडर मारा गया, क्रान्ति चिरजीवी हुई। इस प्रान्त में क्रान्तिकारी दल के दो ही बडे शत्रु थे। दोनों का ही नाश दो महान् व्यक्तियो द्वारा हुआ। मेरा भ्रम था। दिवाकर दा हमारे एकमात्र नेता हैं।

स्वामी आप चुप क्यो है ?

वीणा मुझे ठीक-ठीक कुछ नही मालूम। जब मनोहर की हत्या करके मैं बाहर निकली तभी ट्यूडर की कोठी के आगे पचासों सिपाही और अफसर मौजूद थे। सारे शहर मे बेचैनी, भय और आशंका का वातावरण था। मैंने सुना शराब मे मस्त ट्यूडर रात को क्लब से लौट रहा था कि सड़क पर किसी ने उसकी हत्या कर दी। मैं समझ गई। अब सवेरे मनोहर की मृत्यु का समाचार भी फैल गया होगा। (दिखाकर) यह मनोहर की छाती से निकले रक्त से सना रूमाल है। मेरा तर्पण पूरा हुआ। मैं···मैं··· क्या वह एक स्वप्न था ?

नीलूदा (पैरों पर गिरकर) तुम सचमुच भवानी हो, शक्तिमयी माँ।

स्वामी ऐसे उदाहरण बहुत हैं जिनमें स्त्रियो ने अपने पति की हत्या की हो, लेकिन इस उद्देश्य के लिए नहीं, वीणा।

वीणा (अपने आप) मेरा हृदय पति के कुकृत्यों से भर गया था।

स्वामी किन्तु वह तो दिवाकर का हितेच्छु था न ?

वीणा था, किन्तु बाद में नहीं रहा। ओहदे के लोभ ने उसे पागल बना दिया था। जब मैंने देखा कि वह दिवाकर के साथ सारे गिरोह को पकड़ने की फिक्र में है, तभी मैंने समझ लिया वह मनुष्य नहीं पशु है। उसने मुझे उसे फुसलाए रखने का आदेश दिया। उसने मुझे दिवाकर से भेद लेने को कहा। उसने मुझे यदि आवश्यकता पड़े तो आत्मसमर्पण करने को कहा।

नीलूदा क्या मनुष्य इतना भी नीच हो सकता है ?

स्वामी मनुष्य की ऊँचाई और नीचाई का कोई अन्त नहीं।

राजेन्द्र यासीन अभी तक क्यों नहीं आ रहे है ?

रेणु मैं धन्य हुई, अब मुझे कोई चिन्ता नहीं है। अब मैं शान्त हूँ।

वीणा मैं दिवाकर दा की तुच्छ शिष्या हूँ, बहन। दिवाकर महान् हैं।

स्वामी मैं अपनी उम्र का शेष भाग देकर कामना करता हूँ कि दिवाकर दा हमारा नेतृत्व करने के लिए जीवित रहे।

राजेन्द्र मैं विश्वास करता हूँ कि वह जीवित हैं।

नीलूदा अब हमें मुरली के पकड़े जाने का भी कोई दुख नहीं है। हमारा प्राण यासीन में अटक रहा है। दिवाकर दा का यह काम विश्व के क्रान्तिकारियों को प्रेरणा देगा।

स्वामी अब हम यहाँ सुरक्षित नहीं हैं। ट्यूडर की हत्या से क्रुद्ध होकर पुलिस चप्पा-चप्पा जमीन छान डालेगी। यासीन आ जाते। (दूर देखकर) यह कौन आ रहा है ?

नीलूदा यासीन, यासीन !

[यासीन आता है।]

यासीन हमारे नेता दिवाकर दा ने ट्यूडर की हत्या कर दी। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की।

स्वामी वह कहाँ हैं ?

यासीन (चुप रहकर) बारह बजे रात को शराब में मस्त ट्यूडर क्लब से जा रहा था। दिवाकर दा ने छायादार पेड़ के नीचे से ट्यूडर पर पहला फायर किया। वह उसके कान के पास लगा। ट्यूडर ने भी एक फायर किया। दिवाकर दा गोली बचाकर एकदम ट्यूडर के सामने हो गए और चार गोलियाँ लगातार दन-दन करके ट्यूडर पर दाग दीं। वह वहीं ढेर हो गया। मरते-मरते भी एक गोली ट्यूडर की ओर से दिवाकर दा के पैरों में लगी। वह गिर पड़े। लोग शोर सुनकर दौड़े। मैंने उस अन्धेरे में चारों तरफ फायर किया। और दादा को उठाकर अँधेरे-ही-अँधेरे छिपता-बचता चलने लगा। पहले तो लोगों को मालूम ही नहीं हुआ कि क्या हो गया, मैं भी जैसे-तैसे रेल को पार करके जंगल में घुस गया। पर उनके पैर से खून की धार बह रही थी, यह मैंने देखा। खयाल आते ही मैंने कसकर पट्टी बाँध दी। इसी समय दादा को होश आया। वह सारी स्थिति को समझ गए। तीर की तरह हम दोनों दौड़े। लगभग दो मील तक दौड़ने के बाद हम एक जगह ठहरे। दादा बहुत थक गए थे। बैठकर बोले- 'प्यास लग रही है, यासीन ! हम लोग कहाँ हैं ?' मैंने उत्तर दिया, 'लगभग चार मील दूर।' फिर दादा ने पूछा 'ट्यूडर का क्या हुआ ?' मैंने कहा, 'वह उसी समय ढेर हो गया, दादा। मैं पानी खोजता हूँ, दादा।' इतना कहकर मैं पानी की तलाश में चला। दूर जाकर मुझे पानी मिला। लौटकर मैंने कहा 'लो, दादा, पगड़ी भिगोकर लाया हूँ। लो !' पर वहाँ कोई जवाब नहीं मिला। मैंने समझा शायद चोट से बेहोश हो गए हैं। दियासलाई जलाकर देखा··· तो वह अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर चुके थे।

स्वामी क्या ?

सब (चिल्ला उठते हैं) दादा !

यासीन गोली उनके सीने को पार कर चुकी थी। मेरे नीचे से जमीन सरक गई। मैं चाहता था वह जिएँ। उन्हें जीना चाहिए। पार्टी का निर्णय जो भी हो। मैं उनकी जगह प्राण दे दूँगा। पर···

स्वामी दादा का जीवन सदा ही पवित्र रहा है यासीन! वह सदा से हमारे नेता रहे हैं। हम चाहते थे वह जिएँ।

[वीणा, रेणु, राजेन्द्र, नीलू सभी ऐसे चुप हो गए जैसे निष्प्राण! रेणु फटी-फटी आँखों से मौन निस्तब्ध देखती है। वीणा सिर पकड़कर बैठ गई, और सुबकने लगी। राजेन्द्र सुबकने लगा, नीलू जैसे जड़ हो गया।]

यासीन (अपने आप) दादा निरपराध थे। हमीं ने उनका खून किया है।

स्वामी बहुत बड़ी गलती हुई यासीन, बहुत बड़ी। (आँखों में आँसू भर आते हैं पर पत्थर की तरह दृढ़ रहकर) अब वह कहाँ हैं?

यासीन मरने पर भी कितना भव्य था उनका चेहरा! जैसे सो रहे हों। समाधि में मग्न हों।

रेणु (एकदम उठकर) कहाँ हैं मेरे स्वामी, यासीन?

यासीन मैंने उन्हें एक अन्धे कुएँ में डालकर मिट्टी और पत्तों से ढँक दिया है स्वामी!

सब दादा! दादा! (सब रो पड़ते हैं।)

स्वामी यह शोक मनाने का समय नहीं है, साथियो। मुझे डर है पुलिस दूर नहीं है। आओ हम लोग खड़े होकर दादा की स्मृति में अपने-अपने रक्त से उनका तर्पण करें। (स्वामी अपनी कलाई से खून निकालता है। सब लोग अपने शरीर से वैसे ही खून निकालकर) अभय, अमर दिवाकर दा की स्मृति में यही हमारा तर्पण है।

सब लोग रक्त-तर्पण।

स्वामी अपने रक्त-तर्पण के द्वारा हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम उनके पद-चिह्नों पर चलकर माँ को बन्धन-मुक्त करेंगे।

[सब रोते हुए झुककर प्रणाम करते हैं। फिर खड़े होकर देखते हैं कि रेणु का शरीर निर्जीव हो गया है।]

राजेन्द्र स्वामी, दादा के साथ भाभी भी चली गईं।

स्वामी—देख रहा हूँ, रेणु का त्याग दिवाकर दा से किसी प्रकार कम नहीं है। इनको भी उसी स्थान पर पहुँचाओ, राजेन्द्र। उसी स्थान पर।

[राजेन्द्र रेणु का शरीर उठाने लगता है। इसी समय दौड़ता हुआ रामदास आता है।]

रामदास भागो, भागो, पुलिस आ रही है। मुरली मुखबिर हो गया है।

स्वामी इस पहाड के पीछे। पहाड़ के पीछे साथियो!

[नेपथ्य मे आवाज आती है] चारों तरफ से। चारों तरफ।

(और अन्त मे) बोलो माँ की जय! दिवाकर दा की जय!

जय! जय! जय!